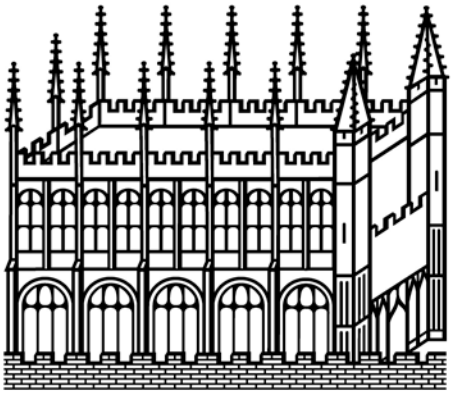

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Tul. 6

13. C. 38

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Kavitāvalī Rāmāyaṇa.

Kulsumaly Ramain

कवितावलीरामायण॥

श्रीगुसाईंतुलसीदासरचित

जिसमें

सम्पूर्ण आशय रामायण का उक्त
कविनेअतिरुचिरछन्दोंमें
वर्णन कियाहै

वही

परमभक्त महात्माओं के उपकारार्थ

दूसरीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छापीगई॥
फरवरी सन् १८८३ ई०

विज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् फरवरी सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेंचने के लिये तैयार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुआहै परंतु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपारकी इच्छाहो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हरिवंश पर्व	रामायण कबितावली
महाभारत	म०भा०पर्वअलेहदाभीहै	रामायणगीतावलीसटीक
१ पहिले हिस्सामें	रामायणरामबिलास	बिनयपत्रिका बा० मो०
आदिपर्व, सभापर्व	रामायण तुलसीकृत	बिनयपत्रिका बा० शि०
बनपर्व	रामायण सटीक मय	लिङ्गपुराण
२ दूसरे हिस्सामें	मानसदीपिकाकोषआदि	बिष्णु पुराण
बिराटपर्व, उद्योगपर्व	तथाजिल्दबंधी	गरुड़पुराण प्रेतकल्प
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	तथामोटेअक्षरोंकी	ब्रह्मोत्तर खण्ड
३ तीसरे हिस्सामें	मयतसवीर व चेपक	**वैद्यक भाषा**
कर्णपर्व, शल्यपर्व	रामायण तुलसीकृत	निघंटु
गदापर्व, सौप्तिकपर्व	सातोंकाण्ड	अमरबिनोद
यौशिकपर्व, विशोकपर्व	१ बालकांड	वैद्यजीवन
स्त्रीपर्व, शान्तिपर्वमें	२ अयोध्याकांड	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली
राजधर्म आपदधर्म,	३ आरण्यकांड	अमृतसागर बड़ा
मोक्षधर्म	४ किष्किन्धाकांड	तथा छोटा
४ चौथे हिस्सामें	५ सुन्दरकांड	वैद्यमनोत्सव
शान्तिपर्व, दानधर्म	६ लंकाकांड	माधवनिदानसंस्कृत
अश्वमेध, आश्रमबासिक	७ उत्तरकांड	**नाटक**
पर्व, व मौशलपर्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचंद्रोदय
बाणप्रस्थान पर्व	रामायणका इतिहास	रामाभिषेक
स्वर्गारोहण पर्व	रामायणमानसदीपिका	आनन्द रघुनन्दन

श्रीगणेशायनमः ॥

कवितावली रामायण ॥

तुलसीकृत बालकाण्ड

सवैया ॥ अवधेशकेद्वारे सकारेगई सुतगोदकै भूपति लैनिकसे। अवलोकिहौं शोच विमोचनको ठगिसीरही जो न ठगेधिकसे ॥ तुलसीमन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातकसे। सजनी शशि में समशील उभै नव नील सरोरुहसे विकसे १ पगनूपुर औ पहुँचीकर कंजनि मंजुबनी मणिमाल हिये। नवनील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृपगोदलिये ॥ अरबिंदसों आनन रूपमरंद अनंदितलोचन भृङ्गपिये। मनमोंन बस्योऐसो बालकजो तुलसी जगमें फलकौन जिये २ तनकीद्युति श्यामसरोरुह लोचन कंजकी मंजुलताईहरैं। अतिसुंदर शोभित धूरिभरे छबिभूरि अनंग कि दूरिधरैं ॥ दमकैं दतिआंद्युति दामिनि ज्यों किलकैं कलबाल विनोदकरैं। अवधेशके बालकचारिसदा तुलसीमन मंदिरमें विहरैं३ कबहूं शशि मांगत आरिकरैं कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरैं। कबहूं करताल बजाइ कै नाचत मातुसबै मनमोद भरैं ॥ कबहूं रिसिआइ रहैं हठिकै पुनिलेत सोईज्यहि लागिअरैं। अवधेश के बालक चारिसदा तुलसीमन मं-

दिरमें विहरैं ४ बरदंत कि पंगति कुंदकली अधराधर पल्लव खोलन की। चपला चमकै घनबीच जगै छबि मोतिनमाल अमोलन की॥ घुंघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की। निवछावर प्राणकरै तुलसी बलिजाउँ लला इनबोलन की ५ पदकंजनि मंजुबनी पनही धनुहीशर पंकज पाणिलिये। लरिकासँग खेलत डोलतहैं सरयूतट चौहटहाट हिये॥ तुलसी ऐसेबालक से नहिंनेह कहा जपयोग समाधिकिये। नरवेखरशूकर श्वान समान कहौ जगमेंफल कौनजिये ६ सरयूबर तीरहिं तीरफिरैं रघुबीर सखा अरुबीर सबै। धनुहींकर तीर निषंगकसे कटिपीतदुकूल नबीनफबै॥ तुलसी तेहि औसर लावनिता दशचारि नौ तीन यकीश सबै। मति भारतिपंगुभई जो निहारि बिचारिफिरी उपमान फबै ७ धनाक्षरी॥ क्षोणीमेंके क्षोणीपति छाजौजिन्है छत्रछाया क्षोणीक्षोणी छायेक्षिति आये निमिराजके। प्रबल प्रचंड बरिबंड बरबेष बपु बरिबेको बोलैं बैदेही बर काजके॥ बोलेबंदी विरुद बजाइ बर बाजनेऊ बाजेबाजे बीरबाहु धुनतसमाजके। तुलसी मुदितमन पुरनरनारि जेते वार बारहैरैं मुखऔध मृगराजके ८ सीयके स्वयंबर समाज जहां राजनिको राजनिके राजामहाराजा जानैनामको। पवन पुरंदर कृशानु भानु धनदसे गुणके निधानरूप धाम शोभाकामको॥ बानबलवान यातुधान पतिसारीषे शूर जिन्ह गुमान सदा सालिम संग्राम को। तहां दश रत्थ के समर्थनाम तुलसीके चपरि चढ़ायो चाप चंद्रमा

ललामको ९ मयन महन पुरदहन गहनजानि आनिकै सबैकोसार धनुष गढ़ायोहै । जनक सदशिजेते भलेभले भूमिपाल किये बलहीन बलआपनो बढ़ायोहै ॥ कुलिश कठोर कूर्म पीठिते कठिनअति हठिनपिनाक काहूचपरि चढ़ायो है । तुलसी सो रामके सरोज पाणि परशतहीं टूट्योमानो बारतेपुरारिही पढ़ायोहै १० छप्पै ॥ डिगति उर्व्वि अति गुर्व्वि सर्व पर्व्वै समुद्रसर । व्याल बधिर तेहिकाल बिकल दिगपाल चराचर ॥ दिग गयंद लर खरतपरत दशकंध मुखभर । सुरविमान हिमभानु यानु संघटित परस्पर ॥ चौंकेबिरंचि शंकरसहित कोलकमठ अहिकलमल्यो । ब्रह्मंड खंड किधौं चंडधुनि जबहिं राम शिवधनुदल्यो ११ घनाक्षरी ॥ लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु सखी कहै सखीसों तू प्रेमपय पालिरी । बालक नृपालजूके ख्यालही पिनाक तोर्‌यो मंडली कमंडली प्रतापदाप दालिरी ॥ जनकको सियाको हमारो तुलसीकी सबको भावतोहैहै मैंजोकह्यो कालिरी । कौशलाकीकोषि परतोषि तन बारियेरी रायदशरत्थकी बलायलीजै आलिरी १२ दूबदधिरोचना कनकथारभरि भरि आरतीसँवारि बरनारि चलींगावतीं । लीन्हे जयमाल करकंजसोहै जानकीके पहिरावो राघवजीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदितमन जनक नगरजन झांकतीं झरोखेलागी शोभारानीपावतीं ॥ मानहुंचकोरी चारु बैठीं निजनिज नीड चंदकी किरणिपीवैं पलको न लावतीं १३ नगर निशानबर बाजैव्योमदुंदुभी बिमान

चढ़ि गानकैकै सुरनारिनाचहीं । जयतिजयतिहूंपुर जयमाल रामउर वरषैं सुमनसुर रूरेरूपराचहीं ॥ जनकको पनजयो सबको भावतोभयो तुलसीमुदित रोम रोम मोदमाचहीं । सांवरो किशोर गोरी शोभापर तृण तोरी जोरीजियो युगयुग युवतिजन यांचहीं १४ भले भूप कहतभले भदेस भूपनिसों लोकलखि बोलिय पुनीतरीति सारषी । जगदंबाजानकी जगतपितु रामभद्र जानिजिय जोही जो लगे न मुहकारषी ॥ देखहैं अनेक ब्याह सुनेहैं पुराणबेद बूझे हैं सुजानसाधु नरनारि पारषी । ऐसे सम समधी समाज न विराजमान रामसे न बर दुलही न सीय सारषी १५ बाणीबिधि गौरीहरि शेषहूं गणेशकही सहीभरी लोमश भुशुंडिबहु बारिषो । चारिदश भुवन निहारिनर नारिसब नारद सो परदान नारद सो पारिषो ॥ तिन्हकही जग में जगमगाति जोरीएक दूजीको कहैयाकोसुनैया चषचारिषो । रमा रमा रमणसुजान हनुमानकही सीयसीन तीय न पुरुष राम सारिषो १६ सवैया ॥ दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिरमांही । गावतिगीत सबैमिलि सुंदरि वेद युवाजुरि विप्रपढ़ाहीं ॥ रामकोरूप निहारति जानकि कंकणके नगकी परछाहीं । याते सबैसुधि भूलिगई करटेकिरही पलटारतिनाहीं १७ घनाक्षरी ॥ भूपमंडली प्रचंड चंडीशको दंड खंड्यो चंडबाहु दंडजाको ताहीसो कहतहौं । कठिन कुठारधार धरिबेकी धीरताहि बीरता बिदिततताकी देखिये चहतहौं ॥ तुलसी समाजराज तजि

सेा विराजैआजु गाजौ मृगराज गजराजज्यौं गहतुहौं। क्षोणीमैंन छांड्यो छप्पौ क्षोणिपको छोनाछोटो क्षोणिप छपनवाको बिरुद बहतुहौं १८ निपट निडरिबोले बचन कुठारपाणि मानीत्रास औनिपनमानौ मौनतागही। रोषेमाखे लषन अकनि अनखोहींबातैं तुलसी बिनीत बाणी बिहँसि ऐसीकही॥ सुयश तिहारेभरे भुवननि भृगुनाथ प्रगटप्रतापआप कह्योसेा सबैसही। टूट्योसो न जुरैगो शरासन महेशजू को रावरी पिनाक मैं सरीकता कांहरही १६ सवैया॥ गर्भकेअर्भक काटनको पटु धार कुठार करालहै जाको। सोईहौं बूझत राजसभा धनुकैदलिहेा दलिहौं बलताको॥ लघुआनन उत्तरदेत बड़े लरिहैमरिहैं करिहै कछुसाको। गोरो गरूर गुमान भर्योकहौकौशिक छोटोसेा ढोटोहैकाको २० घनाक्षरी॥ मख राखिबेके काज राजमेरे संग दयेदले यातुधान जे जितैआ विबुधेशके। गौतमकी तीयतारी मेटेअघ भूरि भारी लोचन अथितभये जनक जनेशके॥ चंडबाहु दंड बल चंडीशको दंडखंड्यो ब्याही जानकीजीते नरेश देशदेशके। साँवरे गोरेशरीर धीरमहाबीर दोऊ नामराम लषण कुमार कोशलेशके २१ सवैया॥ कालकराल नृपालनके धनुभंगसुने फरशालिये धाये। लक्षणराम बिलोकि सप्रेम महारिसिहा फिरि आंखिदिखाये॥ धीर शिरोमणि बीरबड़े बिनयी बिजयी रघुनाथ सोहाये। लायकहौ भृगुनायकसेा धनुशायक सौंपि सुभायसिधाये २२॥ इतिबालकांडसमाप्तः॥ १॥

अथ अयोध्याकाण्ड ॥ सवैया ॥ कीरके कागरज्यों नृप चीर बिभूषणउप्पम अंगनिपाई । औधतजी मगबासके रूख ज्यों पंथकेसाथ जोलोग लुगाई ॥ संगसुबंधु पुनीत प्रिया मानोधर्मक्रिया धरि देह सोहाई । राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊ की नाई २३ कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई । मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई ॥ संग सुभामिनि भाइ भलो दिन द्वै जनु औधहुं ते पहुनाई । राजिव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊकी नाई २४ घनाक्षरी ॥ शिथिल सनेह कहै कौशला सुमित्रा सों मैं न लखी सवति सखी भगिनी ज्यों सेई है । कहै मोहिं मैया कहौं मैं न मैया भरत की बलैया लैहौं भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी काय मन बानीहूं न जानीकी मतेई है । वाम बिधि मेरो सुख सिरिस सुमन सम ताको छल छुरी कोह कुलिश लैंटेई है २५ कीजै कहा जीजी जू सुमित्रा परिपायँ कहै तुलसी सहावै बिधि सोई सहियतु है । रावरे सुभाय राम जन्महीं तें जानियत भरत की मातु को कीवो शोचियतु है ॥ जाइ राज घर व्याह आई राजघर महाराज पूत पाये हुं न सुख लहियतु है । गेह सुधा गेह तेऊ मृग हुं मलीन कियो ताहू पर बाहु बिनुराहु गहियतु है २६ सवैया ॥ जासु के नाम अजामिल से खल कोटि नदी भव बूड़त काढ़े । जो सुमिरे गिरि मेरु सिलाकन होत अजाखुर बारिधि बाढ़े ॥ तुलसी जेहि के पद पंकज ते

प्रगटी तटनी जो हरै अघ गाढ़े । ते प्रभु या सरिता तरिबे कहँ मांगत नाव करारे कै ठाढ़े २७ यहि घाट ते थोरिक दूरिअहै कटिलौं जल थाह देखाइहौं जू । परशेपगधूरि तरैं तरनी घरनीघर क्यों समुझाइहौं जू ॥ तुलसी अव लंब न और कछू लरिका केहि भांति जिआइ हौं जू ॥ बरु मारियेमोहिं बिना पग धोये हौं नाथ न नाउ चढ़ाइ हौं जू २८ रावरो दोष न पायँन को पग धूरि को भूरि प्रभाउ महा है । पाहन ते बन बाहन काठ की कोमलहै जल खाइ रहाहै । पावन पायँपखारि कै नाउ चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहै ॥ तुलसी सुनि केवट के बरबैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहाहै २९ घनाक्षरी । पातभरी सहरी सकल सुत वारे बारे केवटकी जाति कछु वेदन पढ़ाइ हौं । सब परिवार मरे याही लागि राजाजी हौं दीन बित्त हीन कैसे दूसरी गढ़ाइ हौं ॥ गौतमकी घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी प्रभुते निषादकैकै बादन बढ़ाइहौं । तुलसीके ईश रामरावरे सों सांची कहौं बिना पग धोये नाथ नाउन चढ़ाइहौं ३० जिनको पुनीतवारि सिरसि बहैंपुरारि त्रिपथ गामिनी तुबेद कहैं गाइकै । जिनको योगींद्र मुनिवृन्द देव देहधरि करत बिबिध योगजप मनलाइकै ॥ तुलसी जिनकी धूरि परशि अहिल्यातरी गौतम सिधारे गृहगौनो सो लेवाइकै । तेईपाइँ पाइकै चढ़ाइनावधोये बिनु स्वैहौं न पढ़ावनीकेकैहौं न हँसाइ कै ३१ प्रभुरुषपाइकै बुलायबाल घरनिकोंबंदिकै चरण चहूँदिशि बैठे घेरिघेरि । छोटो सो कठौताभरि आनि

पानी गंगाजूको धोइपाइँ पियत पुनीतवारि फेरिफेरि ॥ तुलसी सराहैं ताको भागसानुरागसुर वरषैं सुमन जय जय कहैं टेरिटेरि । बिबुध सनेहसानी बाणी असयानी सुनिहँसे राघोजानकी लषनतन हेरिहेरि ३२ सवैया ॥ पुरते निकसी रघुबीर बधू धरिधीर दये मगमेंडगद्दै । झलकींभरि भालकनीजलकी पटसूखिगये मधुराधरवै ॥ फिरि बूझति हैं चलनोब कितो पिय पर्णकुटी करिहौ कितद्दै । तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियां अति चारुचलीं जलच्वै ३३ जलकोगये लष्षनहैं लरिका परिखौ पियछांह घरीकद्दै ठाढ़े । पांछिपसेउ बयारिकरौं अरुपायँ पखारिहौं भूभुरिडाढ़े ॥ तुलसी रघुबीर प्रिया श्रमजानिकै बैठि बिलंबसों कंटककाढ़े । जानकीनाह को नेहलख्यो पुलकी तनवारि बिलोचन बाढ़े ३४ ठाढ़ेहैं नवद्रुम डारगहैं धनु काँधेधरे करशायकलै । बिकटी भृकुटी बड़ड़ी अंखियां अनमोल कपोलन की छबिहै ॥ तुलसी ऐसीमूरति आनुहिये जड़डारुधौं प्राण निछावर कै । श्रमसीकर सांवरि देहलसै मानो राशि महातम तारकमै ३५ घनाक्षरी ॥ जलजनयन जलजानन जटाहैं शिर योबन उमंग अंग उदित उदारहैं । सांवरेगोरे के बीच भामिनी सुदामिनी सी मुनिपटधारे उर फूलनिके हारहैं ॥ करनि शरासनशिलीमुख निषंगकटि अतिही अनूप काहूभूप के कुमारहैं । तुलसी बिलोकिकै तिलोक केतिलक तीनिरहै नर नारिज्यों चितैर चित्रसारहैं ३६ आगे सोहैं साँवरे कुवँर गोरे पाछे काछे आछ मुनिवेष

धरे लाजत अनंगहैं । बाण बिशिखासन वसन बनहींके कटि कसेहैं बनाइ नीके राजत निषंगहैं ॥ साथ निशि नाथ मुखी पाथ नाथ नंदिनी सी तुलसी बिलोके चित लाइ लेत संगहैं ॥ आनँद उमग मन योबन उमग तन रूपकेउमगउमगत अंगअंगहैं ३७ सुंदरबदन सरसीरुह सोहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनिके । असनि शरासन लसत शुचि शर कर तूण कटि मुनि पट लूट कपटनि के ॥ नारि सुकुमार संग जाके अंग उबटि कै बिधि बिरचे बरूथ बिद्युच्छटनि के । गोरे को बरन देखे सोनो न सलोनो लागे सांवरे बिलोके गर्ब घटत घटनि के ३८ बल्कल बसन धनु बाण पाणि तूण कटि रूपके निधान घन दामिनी बरणहैं । तुलसी सुतीय संग सहज सोहाये अंग नवल कमलहूते कोमल चरणहैं ॥ और सो बसत औरेरति और रति पति मूरति बिलोके तन मनके हरणहैं । तापस बेषें बनाये पथिक पंथे सोहाये चले लोक लोचननि सुफल करणहैं ३९ सवैया ॥ बनिता बनी श्याम-लगौरको बीच बिलोकहु रीसखो मोहिसीकै । मगयोग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचाति मही पद पंकज छ्वै ॥ तुलसी सुनि ग्राम बधू विथकीं पुलकीं तन औ चले लोचन च्वै । सब भांति मनोहर मोहन रूप अनूपहैं भूपके बालक द्वै ४० सांवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता तजि मैन लियोहै । बालक मान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनि वेष कियोहै ॥ संग लिये बिधु बैनी बधू रति को जेहि रंचक रूप दियोहै । पायँन तो पनहीं न पया-

देहि क्यों चलिहैं सकुचात हियोहै ४१ रानी मैं जानी अयानी महा पवि पाहनहूं ते कठोर हियोहै। राजहु काज अकाज न जान्यो कह्योतियको जेहि कान कियोहै॥ ऐसी मनोहर मूरति यं बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियोहै। आंखिन में सखि राखिबे योग इन्हैं किमिकै बनबास दियोहै ४२ शीशजटा उरबाहु बिशाल बिलोचनलालतिरीछीसी भौंहैं॥ तूण शरासन बाणधरे तुलसी बनमारग में शुठिसोहैं। सादर बारहिबार सुभाय चितै तुम्हरौ हमरो मन मोहैं॥ पूंछति ग्रामबधू सियसों कहौसांवरो सो सखि रावरोकोहैं ४३ सुनि सुन्दरबाणि सुधारससानि सयानि है जानकी जानिभली। तिरछेकरि नैनदै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसुकाइ चली॥ तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहुअली। अनुराग तड़ागमें भानुउदै बिकसी मानो मंजुल कंजकली ४४ धरि धीर कहैं चलु देखिय जाइ जहां सजनी रजनी रहिहैं। कहिहैंजग पोच न शोच कछू फल लोचन आपनतो लहिहैं॥ सुख पाइहैं कान सुने बतिया कल आपुस मैं कछु पै कहिहैं। तुलसी अतिप्रेमलगी पलकैं पुलकीलषि रामहिये महिहैं ४५ पदकोमलश्यामल गौरकलेवर राजतकोटि मनोजलजाये। करवाणशरासन शीशजटा सरसीरुह लोचन सोनसोहाये॥ जिनदेखे सखी सतभावहुते तुलसीतिन तौ मनफेरिनपाये। यहिमारगआजु किशोरबधू बिधुबैनिसमेत सुभायसिधाये ४६ मुखपंकजकंज बिलोचनमंजु मनोज शरासनसो बनिभौंहैं। कमनीय कलेवर कोमल

श्यामल गौरकिशोर जटाशिरसोहैं ॥ तुलसी कटितूण धरेधनुबाण अचानकदृष्टिपरी तिरछौहैं । केहिभांतिकहौं सजनीतोहिसों मृदुमूरति द्वै निवसी मनमोहैं ४७ प्रेम सोपीछे तिरीछे प्रियाहिचितै चितुदैचले लैचितचोरै । श्यामशरीर पसैहुलसै हुलसै तुलसी छबिसेा मनमोरै ॥ लोचनलोल चलैभृकुटी कलकाम कमानन सों तृणतोरै । राजतराम कुरंगकेसंग निषंगकसे धनुसोंशरजोरै ४८ शरचारिकचारु बनाइकसे कटिपाणि शरासन शायकलै । बनखेलतराम फिरैंमृगया तुलसीछबिसेाबरणैकिमिकै ॥ अवलोकि अलौकिक रूपमृगी मृग चौंकिचकै चितवे चितुदै । न डगै न भगै जियजानि शिलीमुख पंचधरे रतिनायकहै ४९ बिंधकेबासी उदासीतपोव्रत धारीमहा बिनुनारि दुखारे । गौतम तीयतरी तुलसीसेा कथासुनि भे मुनिवृंद सुखारे ॥ ह्वैहैंशिला सबचंदमुखी परशेपद मंजुलकंज तिहारे । कीन्हिभली रघुनायकजू करुणाकरि काननको पगुधारे ५० ॥ इत्ययोध्याकांडःसमाप्तः ॥ २ ॥

अथआरण्यकांडप्रारम्भ ॥ सवैया ॥ पंचवटी बरपर्ण कुटीतरबैठेहैं रामसुभाय सोहाये । सोहैप्रिया प्रियबंधु लसै तुलसी सबअंगघनेछबिछाये । देखिमृगा मृगनैनी कहैप्रियबैनते प्रीतमके मनभाये । हेमकुरंगके संग शरा सनशायकलै रघुनायक धाये ॥ ५१ ॥ इत्यारण्यकांडः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथकिष्किंधाकाण्डप्रारम्भ ॥ घनाक्षरी ॥ जबअंग दादिनकी मतिगति मंदभई पवनके पूतको न कूदिबेको

बलुगो। साहसीकै शैलपरसहसा सिकिलआइ चितवत चहुंओर औरनिकोकलुगो॥ तुलसी रसातलको निकसि सलिलआयो कोलकलमल्योअहिकमठको बलुगो। चारिहूंचरणके चपेटचापे चिपटिगो उचके उचकिचारि अंगुलअचलुगो॥५२॥ इतिकिष्किंधाकांडसमाप्तः॥ ४॥

अथसुन्दरकाण्डप्रारम्भ॥ घनाक्षरी॥ बासवबरुण बिधिबनते सोहावनो दशाननको कानन बसन्तको शिगारसो। समयपुराने पात परत डरतबात पालतलालत रतिमारको बिहार सो॥ देखे बर वापिका तड़ाग वाग को बनाव रागबशभो विरागी पवनकुमारसो। सीयकी दशा बिलोकि बिटप अशोकतर तुलसी बिलोक्यो सो तिलोक शोक सारसो ५३ माली मेघमाल बनपाल बिकराल भट नीके सब काल सींचे सुधासार नीरके। मेघनाद ते दुलारो प्राणते पियारो बाग अति अनुराग जिय यातुधान धीरके॥ तुलसीसो जानि सुनि सीयको दरशपाइ पैठो बाटिका बजाइ बल रघुवीरके। विद्यमान देखत दशाननको कानन सो तहसनाहस कियो साहसी समीरके ५४ बसनबटोरि बोरि बोरि तेल तमीचर खोरि खोरिधाइ आइ बांधत लँगूरहै। तैसोकपि कौतुकी डेरात ढोले गातकैकै लातके अघातसहैं जीमेंकहैं कूरहै॥ बाल किलकारी कै कै तारी दैदै गारी देत पाछे लागे बाजत निशान ढोलतूरहै। बालधी बढ़न लागी ठौरठौर दीन्ही आगी बिन्ध्य की दवारि कैधौं कोटि शत शूरहै ५५ लाइलाइ आगिभागे बालजाल जहांतहांलघुके निबुकि

गिरिमेरु ते विशालभो। कौतुकी कपीशकूदि कनक कँ-
गूराचड्यो रावणभवनचढ़ि ठाढ़ो तेहिकालभो ॥ तुलसी
बिराज्यो व्योम बालधीपसारी भारीदेखे हहरात भट
कालसोकरालभो। तेजको निधानमानो कोटिककृशानु
भानु नख बिकराल मुख तैसो रिसिलाल भो ५६ बा
लधी बिशाल बिकराल ज्वाल जाल मानो लंकलीलिबे
को काल रसना पसारीहै। कैधों व्योम बीथिका भरेहैं
भूरि धूमकेतु बीररसबीर तरवारसी उघारीहै ॥ तुलसी
सुरेशचाप कैधौं दामिनीकलाप कैधौंचलीमेरुते कृशानु
सरिभारीहै। देखै यातुधान यातुधानी अकुलानी कहैं
कानन उजार्‌यो अब नगर प्रजारीहै ५७ जहांजहां
बुबुकि बिलोकि बुबुकारी देत जरत निकेत धावोधावो
लागिआगिरे। कहांतातमात भ्रातभगिनी भामिनीभामी
ढोटो छोटो छोहरा अभागे भोड़े भागिरे ॥ हाथीछोरो
घोड़ाछोरो महिष वृषभछोरो छेरीछोरो सोवैसोजगावो
जागि जागिरे। तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानी
कहैं बारबार कह्यो पिय कपिसों न लागिरे ५८ देखि
ज्वालजाल हाहाकार दशकंधसुनि कह्यो धरोधरो धाये
बीर बलवान हैं। लिये शूलशेल पास परिघ प्रचंडदंड
भाजन समीरधीरधरे धनुबानहैं ॥ तुलसी समिधसौंजो
लंकयज्ञ कुंडलखि यातुधान पुंगीफल यवतिल धानहैं।
स्रुवासोलँगूर बलमूल प्रतिकूल हबि स्वाहामहा हाँकि
हाँकि हुने हनुमान हैं ५९ गाज्यो कपिगाज ज्यों बि-
राज्यो ज्वालजाल युत भाजेबीर धीर अकुलाइ उठ्यो

रावनो । धावोधावो धरो सुनिधाये यातुधानधारि वारि धारा उलदै जलद जौन सावनो ॥ लपटझपट झहराने हहराने वात भहराने भटपर्‌यो प्रबल परावनो । हकनि ढकेलिपेलि सचिवचले लैठेलि नाथनबलैगो बलअगिन भयावनो ६० बड़ो बिकराल बेष देखि मुनि सिंहनाद डर्‌यो मेघनाद सबिषाद कहै रावनो । वेगजितो मारुत प्रतापमार्तंडकोटि कालहूं करालता बड़ाईजितो बावनो ॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सो साहिब अबै आवनो । काढेकी कुशल रोषे रामवाम देवहूकी विषमबलीसों बादि बैरको बढ़ावनो ६१ पानी पानी सबरानी अकुलानी कहैं जातहैं परानी गत जानी गज चालिहै । बसन बिसारे मणिभूषण सँभारत न आनन सुखाने कहैं क्योंहों कोउ पालिहै ॥ तुलसी मदोवै मीजैहाथ धुनिमाथकहै काहूकान कियो न मैं केतोकह्यो कालिहै । बापुरे बिभीषण पुकारि बार बार कह्यो बानरबड़ी बलाइ घनेघर घालिहै ६२ कानन उजार्‌यो तौ उजार्‌यो न बिगार्‌यो कछू बानर बिचारो बांधि आन्यो हठिहारसों । निपट निडर देखि काहू न लर्‌योबिशेषि दीन्हों न छुड़ाइ कहिकुल के कुठारसों ॥ छोटे औ बड़ेरेमेरे पूतउ अनेरे सब साँपनि सो खेलैंमेलैं गरे छुराधारसों । तुलसी मदोवै रोइरोइकै बिगोवैआपु बारबार कह्यों मैं पुकारि दाढ़ीजारसों ६३ रानी अकुलानी सब डाढ़त परानीजाहिँ सकैं न बिलोकि वेष केशरी कुमार को । मीजिमीजि हाथ धुनिमाथ दशमाथ

तिय तुलसी तिलोनभयो बाहिर अगारको ॥ सब असबाब डाढ़े मैं न काढ़े तैनकाढ़े जियकीपरी सँभार सहन भँडारको । खीझति मदोवै सबिषाददेखि मेघनाद क्यों लुनियत सब याही दाढ़ीजार को ६४ रावण की रानी यातुधानी बिलखानी कहै हाहाकोऊ कहै बीसबाहु दश माथसों । काहे मेघनादकाहे काहरे महोदर तू धीरज न देत लाइलेत क्यों न हाथसों ॥ काहे अतिकाय काहेरे अकंपन अभागे तीप त्यागे भोंड़े भागेजात साथसों ॥ तुलसी बढ़ाइबाद शालत बिशालबैर याहीबल बालसों बिरोध रघुनाथसों ६५ हाटबाट कोटओट अटन अगार पौर खोरिखोरि दौरिदौरि दीन्हो अतिआगिहै । आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू ब्याकुल जहांसो तहां लोकचलै भागिहै ॥ बालधी फिरावै बारबार झहरावै झरै बूंदियासी लंक पघिलाइ पागि पागिहै । तुलसी बिलोकि अकुलानी यातुधानीकहै चित्रहूंके कपिसों निशाचर न लागिहै ६६ लागिलागि आगि भागि भागि चले जहांतहां धीयको न माय बाप पूत न सँभारहीं । छूटेबार बसनउघारे धूमधुंधअंध कहैं वारबूढ़े बारिबारि बारबारहीं ॥ हयहिहिनात भागेजात घहरात गजभारी भीर टेलिपेलि रौंदिखौंदि डारहीं । नामलैचिलात बिललात अकुलात अति तात तात तौंसियत झौंसियत झारहीं ६७ लपट कराल ज्वालजाल माल दहूंदिशि धूम अकुलाने पहिंचाने कौन कहिरे । पानीको ललात बिललात जरेगातजात परेपाइँ मालजात भ्रातहू निबा

हिरे ॥ प्रिया तू पराहिनाथ नाथ तूपराहि बापबाप तूप राहिपूतपूत तू पराहिरे । तुलसी बिलोकि लोक व्याकुल बेहालकहैं लेहि दशशीश अबबीश चपुचाहिरे ६८ बीथिका बजार प्रतिअटनि अगारप्रति पवरि पगार प्रति बानर बिलोकिये । अर्द्धउर्द्धवान रवि दिशिदिशि बानर हैं मानोरह्योहैमभरिबानर तिलोकिये ॥ मूंदेआँखि हिय में उघारे आँखि आगेठाढ़ो धाइजाइ जहँतहँ और कोऊ कोकिये । लेहु अबलेहु तब कोऊ न सिखावो मानौ सोइ सतराइजाइ जाहिजाहि रोकिये ६९ एककरै धौंज एक कहै काढ़ोसौंज एकऔंजिपानीपीकैकहै बनतन आवनो । एक परेगाढ़े एक डाढ़तहिं काढ़े एक देखतहैं ठाढ़े कहैं पावक भयावनो ॥ तुलसीकहत एकनीकेहाथ लायेकपि अजहूं न छांड़ै बालगाल को बजावनो । धावरे बुझावरे कि बावरे जिआवरे औरे आगि लागी न बुझावै सिंधु सावनो ७० कोपिदशकंध तब प्रलय पयोदबोले रावण रजाइ धाइआये यूथजोरिकै । कह्यो लंकपति लंकबरत बुतावोबेगि बानर बहाइमारौ माँहवारि बोरिकै ॥ भले नाथ नाइमाथ चलेपाथ प्रदनाथ बरषैं मुशलधार बार बार घोरिकै । जीवनते जागीआगी चपरि चौगुनीलागी तुलसी भभरि मेघ भागे मुखमोरिकै ७१ इहां ज्वाल जरेजात ह्वां गलानि गरेगात सूखे सकुचात सब कहत पुकारहैं । युग षटभान देखे प्रलय कृशानु देखे शेषमुख अनलबिलोके बारबारहैं ॥ तुलसीसुन्यो न कान सलिल सर्पी समान अति अचरज किये केशरीकुमारहैं । बारिद

बचन सुनि धुनेशीश सचिवन्ह कहैं दशशीश ईश बामता बिकारहैं ७२ पावक पवन पानी भानुहिमवान यम काल लोकपाल मेरे डर डावां डोलहैं। साहिब महेश सदा शंकित रमेश मोहिं महातप साहस बिरंचि लिये मोल हैं ॥ तुलसी तिलोक आज दूजो न बिराजै राज बाजे बाजे राजनि के बेटी बेटा आलहैं। कोहैं ईश नाम बामबाम होत मोहूं सन मालवान रावरेके बावरे से बोलहैं ७३ भूमि भूमिपाल ब्याल पालक पताल नाकपाल लोकपाल जेते सुभट समाजहैं। कहैं माल वान यातुधान पति रावरे को मनहु अकाज आनै ऐसो कौन आजहैं ॥ राम कोह पावक समीर सीय श्वास कीश ईश बामता बिलोकु बानरके ब्याजहैं। जारतप्रचारिफेरि फेरिसो निशंक लंक जहां बांको बीर तोसो शूर शिरताज हैं ७४ पान पकवान बिधि नानो कै सँधानो सीधो बिबि ध बिधान धान बरत बखारहीं। कनक किरीट कोटि पलँग पेटारे पीढ़ काढ़त कहार सब जरे भार भारहीं। प्रबल पावक बाढ़े जहँ काढ़े तहँ डाढ़े झपट लपट भरे भवन भँडारहीं ॥ तुलसी अगारन पगारन बजार बचो हाथी हथसार जरे घोरे घोरसारहीं ७५ हाट बाट हाटक पघिल चलो घीसो घनो कनक कराही लंक तलफत तापसों। नाना पकवान यातुधान बलवान सब पागिपागि ढेर कीन्ही भली भांति भायसों ॥ पाहुने कृशानु पवमान सो परोसो हनुमान सनमानिकै नेवांये चित चायसों। तुलसी निहारि अरि नारि दैदैगारि कहै बावरे सुरारि

बैरकीन्हें राम रायसों ७६ रावण सो राज रोग बाढ़त बिराट उर दिनदिन विकल सकल सुख रांकसो। नाना उपचार करि हरि सुरसिद्ध मुनि होत न बिशोक ओत पावै न मनाकसों॥ रामकी रजाइते रसाइनी समीरसूनु उतरि पयोधि पार सोधि सर बांकसों। यातुधान भूपबुट पुटपाक जात रूप रतन यतन जारि कियोहै मृगांकसों ७७ जारि बारिकै बिधूम बारिधि बुताइ लूम नाइ माथो पगनि भो ठाढ़ो करजोरिकै। मातु कृपाकीजै सहि दानि दीजै सुनि सीय दीन्हीहै अशीष चारु चूड़ामणि छोरिकै। कहा कहौं तात देखे जात ज्यों बिहात दिन बड़ी अवलंवही सो चले तुम तोरिकै॥ तुलसी सनीर नैन नेहसों शिथिल बैन बिकल बिलोकि कपि कहत निहोरिकै ७८ दिवस छ सात जात जानबे न मातु धरु धीर अरि अंत की अवधि रही थोरिकै। बारिधि बँधाइ सेतुऐहैं भानुकुल केतु सानुज कुशल कपि कटक बटोरिकै॥ बचन बिनीत कहि सीताको प्रबोध करि तुलसी त्रिकूट चढ़ि कहत डफोरिकै। जैजै जानकीश दश शीश करि केशरी कपीश कूद्यो बात जात वारिधि हलोरिकै ७६ साहसी समीर सूनु नीरनिधि लंघि लखि लंक सिद्ध पीह निशि जागोहै मशानसो। तुलसी बिलोकि महा साहस प्रसन्न भई देवी सीय सारिषी दियोहै बरदान सो॥ बाटिका उजारि अक्षधारि मारि जारि गढ़ भानुकुल भानुको प्रताप भानु भानुसो। करत बिशोक लोक कोक नद कोक कपि कहैं जामवंत आयोआयो हनुमानसो ८० गगन निहारि कि

लकारी भारी सुनि हनुमान पहिंचानि भये सानँद सचेत हैं । बूड़त जहाज बांच्यों पथिक समाज मानो आजुजाये जानि सब अंकमाल देतहैं ॥ जैजै जानकीश जैजै लषण कपीश कूदैं कपि कौतुकी नटत रेतरेतहैं । अंगद मयंद नलनील बलशील महाबालधी फिरावै मुख नाना गति लेतहैं ८१ आये हनुमान प्राण हेतु अंकमाल देत लेत पगधूरि एक चुंबत लँगूरहैं । एक बूझै बारबार साय समाचार कहौ पवनकुमार भोबिगत श्रम शूलहैं ॥ एक भूषे जानि आगे आनि कंदमूल फल एक पूजै बाहुबल मूल तोरि फूलहैं । एक कहैं तुलसी सकल सिद्धि ताके जाके कृपा पाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल हैं ८२ सीय को सनेह शील कथा तथा लंक कहै चलेजात चायमो सिराने पथ क्षनमें । कह्यो युवराज बोलि बानर समाज आजु खाहुफल सुनि पेलिपैठे मधुवनमें ॥ मारेबागवान ते पुकारत दिकनगे उजारेबाग अंगदादि खायेघायतन में । कहै कपिराज करिआये कीशकाज महाराज की शपथ महामोद मेरेमनमें ८३ नगर कुबेर को सुमेरकी बराबरी बिरंचिबुद्धि को बिलास लंकनिर्मानभो । ईशहि चढ़ाये शीश बीशबाहु बीरतहँ रावणसो राजाराज तेज को निधानभो ॥ तुलसी तिलोककी समृद्धि सौंज संपदा सकेलि चाकिराखी राशि जागर जहानभो । तीसरे उपास बनबास सिंधुपास सो समाज महाराजजीको एक दिनदान भो ८४ इतिसुन्दरकाण्डसमाप्तः ॥ ५ ॥

अथलंकाकाण्ड प्रारम्भः ॥ घनाक्षरी ॥ बड़ेविकराल

भालुबानर बिशालबड़े तुलसी बड़ेपहारलै पयोधितोपि हैं । प्रबल प्रचण्ड बलबंड बाहुदंड खंडिमंडि मेदनी को मंडलीक लीकलोपिहैं ॥ लंकदाह देखे न उछाह रह्यो काहूको कहत सब सचिव पुकारि पावँरोपिहैं । बांचिहैं न पाछे त्रिपुरारिहू मुरारिहू के कोहै रणरारि को जो कोशलेश कोपिहैं ८५ त्रिजटाकहति बारबार तुलसी खरीसो राघवबाण एकही समुद्र सातोसोषिहैं । सकुल सँहारि यातुधान धारि जंबुकादि योगिनी जमाति कालिका कलाप तोषिहैं ॥ राजदैनि बाजिवो बजाइकै बिभीषणको बजैगो व्योम बाजने बिबुध प्रेम पोषिहैं । कौन दशकंध कौन मेघनाद बापुरोको कुंभकर्ण कीट जब राम रणरोषिहैं ८६ बिनय सनेहसो कहतिसिय त्रिजटासों पायेकछु समाचार आरज सुवनके । पायेजू बँधाये सेतु आयउतरे भानुकुलकेतु आये देखिदेखि दूतदारुण दुअन के ॥ बदन मलीन बलहीन देखिदेखि मानो मिटेघटे तमीचर तिमिर भुवनके । लोकपति शोक कोक मूंदेकपि कोकनद दंडद्वैरहेहैं रघुआदित उवनके ८७ ॥ झूलना ॥ सुभुजमारीच खरत्रिशिर दूषण बलीबधत ज्यहि दूसरो शरनसाध्यौ । आनिपरभाम बिधिबाम त्यहिराम सो सकत संग्राम दशकंध कांप्यो ॥ समुझि तुलसीशकोपि कर्म घरघरघैरु बिकल सुनि सकल पाथोधि बांध्यो । बसत गढ़बंक लंकेश नायक अकृत लंकनहिँखात कोउ भातरांध्यो ८८ ॥ सवैया ॥ बिश्वजयी भृगुनायकसे बिनु हाथ भये हनिहाथ हजारी । बातुल मातुलकी न सुनी

शिषकातुलसी कपिलंकनजारी ॥ अजहूंतेभलो रघुनाथ मिलो फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी। कीर्त्ति बड़ी करतूति बड़ी जनबात बड़ी सो बड़ोइ वजारी ८६ जब **पाहन भावन बाहनसे उतरे बनरा जैजैरामरढ़े। तुलसी** लिये शैलशिला सब सोहत सागर ज्यों बलवारि बढ़े ॥ करिकोप करै रघुबीरकी आयसु कौतुकही गढ़कूदिचढ़े। चतुरंग चमूपलमेंदलिकै रणरावण राड़को हाड़गढ़े ६० घनाक्षरी ॥ बिपुल बिशाल बिकराल कपि भालु मानौ कालबहु बेषधरे धायेकिये करषा। लियेशिला शैल तोरि ताल औ तमालतोरि तोपै तोयनिधि सुरको समाज **हरषा ॥ डगेदिगकुंजर कमठकोल कलमल डोलै धरा-** धरधारि धराधर धरषा। तुलसी तमकिचलैं राघव की शपथकरैं को करै अटक कपिकटक अमरषा ६१ आये **शुकसारन बोलाये ते कहनलागे पुलकि शरीर सैना करत** फहमही। महाबली बानर बिशाल **मालकाल से** कराल हैं रढ्ढेकहां समाहिगे कहांमही ॥ हस्यो दशकंध रघुनाथको प्रतापसुनि तुलसी दुरावै मुख सुखत सह- मही। रामके बिरोध बुरो बिधि हरि हरहूको सबको भलोहै राजारामके रहमही ६२ आयोआयो आयो सोइ बानर बहोरि भयोशोर चहूंओर लंकआये युवराजके। एककाढ़े सौंजएक धौंजकरे कहाकैहै पोचभई महाशोच सुभट समाजके॥ गाज्यो कपिराज रघुराजकी शपथकरि मूंदेकान यातुधान मानो गाजे गाजके। सहमि सुखात बात जातकी सुरति करि लवाज्यों लुकात तुलसी झपटे

बाजके ९३ दूषण बिराधखर त्रशिरा कबंधबधे तालऊ करालबेधे कौतुकहै कालिको । एकहीं बिशिष बश भये बीर बांकुरेसो तोहू है बिदित बल महाबली बालिको ॥ तुलसी कहतहित मानत न नेकुसंग मेरोकहा जै है फल पैहे तू कुचालिको । बीरकरिकेसरी कुठार पानि मानि हारितेरी कहाचली बूटेतोसेा गनैघालिको ९४ सवैया ॥ तो सोंकहों दशकंधररे रघुनाथ बिरोध न कीजियबौरे । बालिबली खरदूषण और अनेक गिरेजेते भीतमेंदौरे ॥ अैसिय हालभई तोहिकोन तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे । रामके रोष न राखिसकैं तुलसी बिधि श्री पति शंकरसौरे ९५ तू रजनीचर नाथ महा रघुनाथके सेवक को जनहोहौं । बलवान है श्वान गलीअपनी तोहिलाज न गालबजावत सोहौं ॥ बीशभुजा दशशीशहरौं न डरौं प्रभुआयसु भंगतेजोहौं । खेतमें केहरिज्यों गजराजदलौं दल बालिको बालक तौहौं ९६ कौशलराजके काज हौं आजु त्रिकूट उखारि लै बारिधि बोरौं । महाभुज दंड द्वै अंडकटाह चपेटके चोट चटाक दै फोरौं ॥ आयसु भंगते जोनडरौं सब मीजि सभासद श्रोणितघोरौं । बालिको बालक तौ तुलसी दशहूं मुखके रणमेंरदतोरौं ९७ अति कोपसो रोप्योहै पाउँसभा सबलंक सशंकित शोरमचा । तमके घननाद से बीर प्रचारिकै हारि निशाचर सैनपचा ॥ न टरैपगमेरुहिते गरुभोसेा मनोमहि संग बिरंचि रचा । तुलसी सबशूरसराहतहैं जगमें बलशालिहै बालि बचा ९८ ॥ घनाक्षरी ॥ रोप्योपावँ पैजकेविचारि रघुबीर

बल लागेभट सिमिटि न नेकु टसकतुहै। तजिधीर धरण धरणिधर धमकत धराधर धीरभार सहि न सकतु है। महाबली बालिको दबत दलकत भूमि तुलसी उछलिसिंधु मेरु मसकतहै। कमठ कपीनपीठ घंटापरो मंदरको सोइ आयो कामपै करेजो कसकतुहै ९९ ॥ झूलना ॥ कनक गिरि संगचढ़ि देखिमर्कट कटक बदति मंदोदरी परम भीता। सहस भुजमत्त गजराज नर केशरी परशुधरगर्व जेहिदेखिबीता ॥ दास तुलसी समरसबल कौशलधनी ख्यालहीं बालि बलिसालिजीता। रेकंत तृणदंत गहि शरण श्रीरामकहि अजहुं यहिभांतिलै सौंपुसीता १०० रेनीचमारीच विचलाइहति ताड़का भंजि शिवचाप सुख सबहि दीन्ह्यो। सहस दशचारिखल सहित खरदूषणहि पठै यमधाम तैं तउन चीन्ह्यो ॥ मैंजोकहों कंत सुनुमंत भगवंत सेा बिमुखह्वै बालिफल कौनलीन्ह्यो ॥ बीशभुज शीशदशखीशगये तबहिंजब ईशके ईशसेां वैरकीन्ह्यो १ बालिदलि कालि जलयान पाषान किये कंत भगवंत तैं तवन चीन्हे। बिपुल बिकराल भटभाल कपिकाल से संगतरु तुंगगिरि शृंगलीन्हे ॥ आइगे कौशलाधीश तुलसीश जेहिछत्र शशिमौलि दशदूरिकीन्हे। ईश बक-शीशजनि खीशकरु ईशसुनु अजहुकुल कुशल बैदेहिदो न्हे २ जाकेसैन सम्मूहकपि कौनगनै अर्बुदै महाबलिवी र हनुमानजानी। भूलिहैं दशदिशाशीश पुनिडोलिहैं को पि रघुनाथ जब बानतानी ॥ बालिहूंगब जियमाहँऐसी कियोमारि दहपट्ट कियो यमकीधानी। कहत मंदोदरी

सुनहिं रावणमतो बेगिलैदेहि बैदेहिरानी ३ गहन उजारि पुरजारि सुतमारि तब कुशल गो कीश वरबैरि जाको । दूसरोदूत प्रणरोपि कोप्यौ सभा खर्बकियोसर्ब को गर्बयाको ॥ दासतुलसी सभय बदति मयनंदिनी मंदमतिकंतसुनु मंतह्यांको । तौलौं मिलुबेगिनहिँ जौलौं रणरोष भयो दाशरथिबीर बिरुदैतबांको ४ घनाक्षरी॥ कानन उजारि अक्षमारि धारिधूरी कीन्हो नगर प्रचारयोसो बिलोक्यो बलकीशको । तुह्मै विद्यमान यातुधान मंडलीमें कपि कोपि रोप्योपावँ सोप्रभाउ तुलसीशको॥ कंतसुनु मंतकुल अंतकिये अंतहानि हायतोकीजै हियते भरोसो भुजबीश को । तौलौं मिलुबेगि जौलौं चाप न चढ़ायो रामरोषि बान काढ्यो नदलैआ दशशीश को ५ पवनको पूतदेख्यो दूतबीर बाँकुरोजो बंक गढ़लंकसो ढकाढकेलि ढाहिगो । बालिबल शालिकोसो कालिदाप दलिकोपि रोप्यो पाउँ चपरि चमूको चाउ चाहिगो ॥ सोइ रघुनाथ कपिसाथ पाथनाथ बाँधि आयो नाथभागे ते खिरिरखेह खाहिगो । तुलसी गरबतजि मिलिबे को साजसाजि देहिसिय न तो पिय पायमाल जाहिगो ६ उदधि अपार उतरतहूं न लागीबार केशरी कुमारसो अदंडकैसो डांड़िगो । बाटिका उजारि अक्ष रक्षकनि मारि भटभारी भारी रावरेको चाउरसो कांड़िगो ॥ तुलसी तिहारे विद्यमान युवराज आजु कोपि पाउँरोप्यो सब छूछकैकै छांड़िगो । कहेकी न लाजपिय अजहूं न आवेबाज सहित समाज गढ़रांड़ कैसोभांड़िगो ७ जाके

रोषदुसह त्रिदोष दाह दूरिकीन्हे पैअत न क्षत्रीखोज खोजत खलकमें। महिषमतीको नाहु साहसी सहसबाहु समर समर्थनाथ हेरिये हलकमें ॥ सहित समाज महा राजसो जहाजराज बूड़िगयो जाकेबल वारिधि छलक में। टूटत पिनाकके मनाक बाम रामसेते नाक बिनुभये भृगुनायक पलकमें ८ कीन्ही क्षोणी क्षत्री बिनु क्षोणिप छपनहार कठिन कुठारपाणि बीरवान जानिकै । परम कृपाल जो नृपाल लोकपालनपै जब धनुहाईहैंहै मन अनुमानिकै ॥ नाकमें पिनाकमिसि बामता बिलोकिराम रोक्यो परलोक लोकभारि भ्रममानिकै। नाइ दशमाथ महिजोरि बीशहाथ पिय मिलियेपै नाथ रघुनाथ पहिं चानिकै ९ कह्यो मतमातुल बिभीषणहुं बारबार अंचल पसारि पियपायँ लैलैहौंपरी। बिदित बिदेह पुरनाथ भृगुनाथगति समय सयानी कीन्ही जैसीआइ गौंपरी ॥ बायस बिराध खरदूषण कबंध बालि बैर रघुबीरके न पूरीकाहूकोपरी। कंत बीशलोचन बिलोकिये कुमंतफल ख्याल लंकलाई कपि रांड़कीसी झोपरी १० सवैया ॥ रामसो शामकियेनितहै हित कोमलकाज न कीजियठाढ़ो। आपनि सूझिकहौं पियबूझिये जूझिबेयोगन ठाहरुनाढ़ो॥ नाथसुनी भृगुनाथकथा बलिबालिगये चलिबातकेसाढ़े। भाइ बिभीषण जाइमिल्यो प्रभुआइपरे सुनिसायरकाढ़े ११ पालिबेको कपिभालु चमू यमकाल करालहु कोप हरीहै। लंकसेबंक महागढ़ दुर्गम ढाहिबे दाहिबेको कहरीहै ॥ तीतर तोमतमीचर सैन समीरको सून बड़ो

बहरीहै । नाथ भलो रघुनाथमिलो रजनीचर सैनहिये हहरीहै १२ घनाक्षरी ॥ रोषे रणरावण बोलायेबीरवान इत जानत जे रीतिसब संयुग समाजकी । चली चतुरंग चमूचपरि हने निशान सैना सराहन योग रातिचरराज की ॥ तुलसीबिलोकि कपिभालु किलकत ललकतलखि ज्यों कंगाल पातरीसुनाजकी । रामरुख निरखि हरष्यो हिय हनुमानमानो खेलकर खोलीशीश ताजवाजकी १३ साजिकैसनाह गज गाहसेउछाह दल महाबली धायेबीर यातुधान धीरके । इहां भालु बंदर बिशाल मेरु मंदर में लिय शैल सालतोरि नीरनिधि तीरके ॥ तुलसी तमकि तकि भिरेभारी युद्धक्रुद्ध सेनपसराहे निज निज भटभी रके । रुंडनके झुंडझमिरमि झुकरसे नाचैसमर सुमारशूर मारे रघुबीरके १४ ॥ सवैया ॥ तीखे तुरंग कुरंग सुरं गनि साजिचढ़े छटि छैलछबीले । भारीगुमान जिन्हे मन में कबहूं न भये रणमें तनढीले ॥ तुलसीलखि केहरिके हरिके झपटे पटकेसे सशूर सलीले । भूमिपरे भट घूमि कराहत हांकिहने हनुमान हठीले १५ शूरसयो पलसा जिसुबाजि सु शेलधरे बगमेल चलेहैं । भागेभुजा भरि भारी शरीरबली बिजयी सबभांति भलेहैं ॥ तुलसी जिन्हे धाइधु के धरणी धरणी धरधोरधकान हले हैं । ते रण तिच्छन तच्छन लाखन दानिज्यों दारिद दाबि दलेहैं १६ गहिमंदर बंदर भालु चले सोमनो उनये घन साव नके । तुलसी उतझुंड प्रचंडझुके झपटे भटजे सुरदावन के ॥ बिरुझेबिरुदैत जेखेत अरे न टरे हठिबैर बढ़ावनके ।

रण मारमची उपरीउपरा भलेबीर रघुप्पति रावन के १७ शरतोमर शेलसमूह पवारत मारतबीर निशाचरके। इत ते तरुमाल तमालचले खरखंड प्रचंड महीधरके ॥ तुलसी करिकै हरिनादभिरे भटखग्ग खगेखपु आखरके। नखदंतनसों भुजदंड बिहंडत मुंडसो मुंड परेझरके १८ रजनीचर मत्त गयंदघटा बिघटै मृगराज के साजलरै। झपटै भटकोटि महीपटकै गरजै रघुबीर की सौंहकरै ॥ तुलसी उतहांक दशाननदेत अचेत भे बीरको धीरधरै। बिझुझोरन मारुतको बिरुदैत जो कालइकाज सो बूझि परै १६ जे रजनीचर बीर बिशाल कराल बिलोकत का लनखाये। ते रण रोर कपीश किशोर बड़ेबर जोरपरे फँगपाये ॥ लूमलपेटि अकाश निहारिकै हांकिहठी हनुमान चलाये। सूखिगेगात चले नभजात परेभ्रमबात न भूतलआये २० जो दशशीश महीधर ईशको बीशभुजा खुलिखेल निहारो। लोकप दिग्गज दानवदेव सबै सहमे सुनि साहस भारो ॥ बीरबड़ो बिरुदैतबली अजहूं जगगावत जासुपवांरो। सो हनुमान हन्योमुठिका गिरि गो गिरिराज ज्यों गाजकोमारो २१ दुर्गम दुर्ग पहारते भारे प्रचंडमहा भुजदंडबनेहैं। लख्यमें पख्य रतिख्यन तेजसे शूरसमाजमें गाजगनेहैं ॥ ते बिरुदैतबली रणबांकुरे हांकिहठी हनुमान हने हैं। नामलै रामदेखावत बंधु को घूमतघायल घायघनेहैं २२ ॥ घनाक्षरी ॥ हाथिन सो हाथीमारे घोरे घोरे सों सँहारे रथन सों रथ बिदरन बलवानकी। चंचल चपेटचोट चरण चकोटचाहे हहरानी

फौजैं भहरानी यातुधानकी ॥ बार बार सेवक सराहना करत राम तुलसी सराहेरीति साहेब सुजानकी । लांबी लूमलसत लपेटि पटकतभट देखोदेखो लषण लरनि हनुमानकी २३ दबकिदबोरे एकबारिधिमें बोरे एकमगन महीमें एकगगन उड़ातहै । पकरिपछारे इकचरण उखारे एक चीर फारिडारे एक मींजिमारेलातहै ॥ तुलसी लषण राम रावण बिबुधबिधि चक्रपाणि चण्डिपति चण्डिका सिहातहै । बड़े बड़े बाणइत बीर बलवान बड़े यातुधान यूथपति पाते बात जातहै २४ प्रबल प्रचण्ड बरि बंड बाहुदंड बीर धाये यातुधान हनुमान लियो घेरिकै । महाभुजदण्ड कुंजरारि ज्यों गरजि भट जहां तहांपटके लँगूर फेरि फेरिकै ॥ मारेलात तोरेगात भागेजात हा हाखात कहै तुलसी सराखि रामकी सों टेरिकै । ठहर ठहर परे कहर कहर उठे हहर हहर हर सिद्ध हँसे हेरि कै २५ जाकी बांकी बीरता सुनत सहमत शूर जाकी आंच अजहूं लसत लंक लाहसी । सोइ हनुमान बलवान बांको बानइत जेहैं यातुधान सेना चले लत थाहसी ॥ कंपत अकंपन सुखाय अतिकाय काय कुंभउकरन आइ रह्यो पाइ आहसी । देखे गजराज मृगराज ज्यों गरजि धायो बीर रघुवीरको समीरसून साहसी २६ झूलना ॥ मत्त भट मुकुट दशकण्ठ साहस शैल शृंग विदरन जनु बज्र टांकी । दशन धरि धरणि चिक्करत दिग्गज कमठ शेश संकुचित शंकित पिनाकी ॥ चलत महि मेरु उच्छलत सागर सकल बिकल बिधि बधिर दिशि बिदिशि झांकी ।

रजनिचर घरनि घर गर्भ अर्भक स्रवत सुनत हनुमानकी हांक बांकी २७ कौनकी हांकपर चौंकि चंडीश बिधि चंड कर थकित फिरि तुरगहांके। कौनके तेज बलसीम भट भीमसे भीमता निरखि करि नयन ढांके॥ दास तुलसीश के बिरद बरणत बिदुष बीर बिरुदैत बर बैरि धाके। नाक नरलोक पाताल कोउ कहत किन कहां हनुमानसे बीर बांके २८ यातुधानावली मत्त कुंजर घटा निरखि गजराज मानों गिरिते टूट्यो। बिकट चटकन चोट चरन गहि पटकि महि निघटि गये सुभट सत सबको छूट्यो॥ दास तुलसी परत धरनि धरकत झुकत हाटसी उठत जंबुकनि लूट्यो। धीर रघुबीरके बीर रण बांकुरे हांकि हनुमान कुलि कटक कूट्यो २६ छप्पै॥ कतहुं बिटप भूधर उपारि अरिसैन बरष्षत। कतहुं बाजिसों बाजि मर्दि गजराज करष्षत॥ चरण चोट चटकन चकोट अरि उर शिर बज्जत। बिकट कटक बिहरत बीर बारिद जिमि गर्जत॥ लंगूर लपेटत पटकि महि जयति राम जय उच्चरत। तुलसीश पवननंदन अटल युद्ध क्रुद्ध कौतुककरत ३० घनाक्षरी॥ अंग अंग दलित ललितफूले किंशुक से हने भट लाषन लषण यातुधानके। मारिकै पछारिकै उपारि भुज दंड चंड खंडखंड डारेते बिदरि हनुमानके॥ कूदत कबंधके कदंब बंबसी करत धावत देखावतहैं लघौ राघौ बानके। तुलसी महेश बिधि लोकपाल देव गण देखत बेवानचढ़े कौतुक मशानके ३१ लोथिनसों लोहूके प्रवाह चले जहां तहां मानहु गिरिन्ह गेरु झरना झरतुहैं। श्रो-

णित भरत घोर कुंजर करारे भारे कूलते समूल बाजि बिटप परतुहैं ॥ सुभट शरीर नीर चारी भारी भारी तहँ शूरन उछाह कूर कादर डरतहैं । फेकरिफेकरि फेरू फारि फारिपेट खात काक कंक बालक कोलाहल करतु हैं ३२ ओझरीय झोरीकांधे आंतनकी सेल्ही बांधे मुंडके कमंडल खपर किये कोरिकै । योगिनी जमाति जोरि झुंड बनी तापससे नीरतीरबैठीसो समर खोरिखोरिकै ॥ श्रोणित सो सानिसानि गूदाखात सतुआसे एकप्रेतपियत बहोरि घोरि घोरि कै । तुलसी बैताल भूत साथ लिये भूतनाथ हेरि हेरि हँसतहैं हाथ जोरिजोरिकै ३३ सवैया ॥ राम शरासन ते चले तीर रहे न शरीर हड़ावरि फूटी । रावण धीर न पीर गनी लखि लै कर खप्पर योगिनि जूटी ॥ शोणित छीट छटानि छुटी तुलसी प्रभु सोंहैं महा छबि छूटी । मानौ मरकतशैल बिशाल में फैलिचली बर बीर बहूटी ३४ घनाक्षरी ॥ मानो मेघनाद सों प्रचारि भिरे भारी भट आपने आपने पुरुषारथ न ढीलकी । घायल लषण लाल सुनि बिलखाने राम भई आश शिथिल जगन्निवास डीलकी ॥ भाईको न मोह क्षोह सीयको न तुलसीश कहै मैं बिभीषण की कछु न सबीलकी । लाज बांह बोल की नेवाजे की सँभार मार साहब न राम से बलाइ लेउ भीलकी ३५ सवैया ॥ कानन बास दशानन सो रिपु आनन श्रीशशि जीतिलियोहै । बालि महाबल शालि दल्यो कपिपालि बिभीषण भूप कियोहै ॥ तीय हरी रण बंधु पर्‌यो पै भर्‌यो शरणागत शोच हियोहै ।

बाहँ पगार कृपाल उदार कहां रघुबीर सो बीर बियोहै ३६ लीन्ह उखारि पहार बिसार चल्यो तेहिकाल बिलंब न लायो । मारुत नंदन मारुत को मन को खगराज को बेग लजायो ॥ तीखे तुरा तुलसी कह तोपैं हिये उपमा को समाउ न आयो । मानी प्रत्यक्ष परव्वत कीन भली कलसी कपियोधुकिधायो ३७ घनाक्षरी ॥ चल्यो हनुमान सुनि यातुधान कालनेमि पठयो सो मुनि भयो पायो फल छलिकै । सहसा उखारो है पहार बहु योजन को रखवारे मारे भारे भूरि भट दलि कै ॥ बेग बल साहस सराहत कृपाल राम भरतकी कुशल अचल ल्यायो चलि कै । हाथ हरिनाथ के बिकाने रघुनाथ जन शील सिंधु तुलसीश भलो मानो भलिकै ३८ बाप दियो कानन भो आनन सुभानन सो बैरी भो दशानन सो तीय को हरण भो । घोर रारि हेरि त्रिपुरारि बिधि हारे हिय घायल लषणबीर बानर बरण भो । बालि बलशालि दलिपालि कपिराजकै विभीषणनेवाजि सेतसागर तरण भो ॥ ऐसे शोकमें तिलोककै बिशोकपलहीमें सबहीके तुलसीके साहेब शरणभो ३९ सवैया ॥ कुंभकरन्न हन्यो रणराम दल्यो दशकंधर कंधरतोरे । पूषणबंश विभूषणपूषण तेजप्रताप गरेअरि ओरे ॥ देव निशान बजावत गावत सावत गो मन भावतभोरे । नाचत बानरभालु सबै तुलसीकहिहारे हहा भयहोरे ४० घनाक्षरी ॥ मारेरण रातिचर रावण सकुलदल अनुकूल देवमुनि फूल बरषतुहै । नाग नर किन्नर बिरंचि हरिहर हेरि पुलक शरीर हियहेतु हर

षतुहै ॥ बामओर जानकी कृपानिधान के बिराजै देखत विषादमिटे मोद सरसतु है । आयसु भोलोक निशिधारे लोकपाल सब तुलसी निहालकैकै दिये सरषतु है ४१ इतिश्रीलंकाकाण्डः सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भः ॥ सवैया ॥ बालिसे बीर बिदारि सुकण्ठ थप्यो हरषे सुर बाजन बाजे । पलमें दल्यो दाशरथी दशकन्धर लंक बिभीषण राजबिराजे ॥ राम सुभाउ सुने तुलसी हुलसे अलसी हमसे गल-गाजे । कायर कूर कपूतन की हदतेउ गरीबनेवाज नेवाजे ४२ वेद पढ़ै विधि शम्भु सभीत पुजावन रा-वणसो नितआवै । दानव देव दयावने दीन दुखी दिन दूरिहिते शिरनावै ॥ ऐसेउ भागभगे दशभालते जो प्रभुता कबिकोबिद गावै । रामसबाम भये त्यहि बामहिं बामसबै सुखसंपतिलावै ४३ बंदबिरुद्ध मही मुनिसाधु सशोक कियो सुरलोक उजार्‌यो । और कहा कहों तीय हरी तबहूं करुणाकरि कोप नेवार्‌यो ॥ सेवक क्षोहते छांड़ीक्षमा तुलसी लख्यो रामसुभाउ तिहार्‌यो ॥ तौलौं न दापदल्यो दशकंधर जौलौं बिभीषण लात न मार्‌यो ४४ शोकसमुद्र निमज्जत काढ़ि कपीश कियो जगजा-नत जैसो । नीच निशाचर बैरिको बंधु बिभीषण कीन्ह पुरंदरसैसो ॥ नामलिये अपनाइ लियो तुलसीसो कहै जगकौन अनैसो । आरत आरति भंजन राम गरीब नेवाज न दूसरऐसो ४५ मीतपुनीत किये कपि भालुको पालै जो काहू न बाल तनूजो । सज्जन सीव विभीषणभो

अजहूंबिलसै वरबंधुबधू जो ॥ कोशलपाल बिनातुलसी शरणागतपाल कृपाल न दूजो । कूरकुजाति कपूतअघी सबकी सुधरै जो करैनरपूजो ४६ तीय शिरोमणि सीय तजी ज्यहि पावक की कलुषाई दहीहै । धर्म धुरंधर बंधु तज्यो पुरलोगनकी बिधि बालिकहीहै ॥ कीश निशाचर की करणी न सुनी न बिलोकि न चित्तरहीहै । रामसदा शरणागतकी अनखोहींअनैसी सुभाय सहीहै ४७ अपराध अगाधपरे जनते अपने उर आनत नाहिंनजू । गणिका गजगीध अजामिलके गनिपातकपुंज सेराहिन जू ॥ लिये बारक नाम सो धामदियो ज्यहि धाम महा मुनिजाहिंनजू । तुलसीभजु दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिनजू ४८ प्रभु सत्यकरी प्रह्लादगिरा प्रगटे नरकेहरि खंभमहां । झषराजग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल बिलंबकिये न तहां ॥ सुरसाखीदै राखीहै पंडुबधू पटलूटत कोटिक भूपजहां । तुलसी भजु शोच बिमोचन को जनकोप्रण राम न राख्योकहां ४९ नरनारि उघारि सभामँह होत दियेपट शोच हर्यो मनको । प्रह्लादबिषाद निवारण वारण तारण मीत अकारन को ॥ जो कहावत दीनदयाल सही त्यहि भार सदा अपने पनको । तुलसी तजि आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको ५० ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्त्तिलही । निजलोकदयो सबरीखगको कपि थापिसो मालुमहै सबही ॥ दशशीश बिरोध सभीत बिभीषण भूपकियो जग लीकरही । करुणानिधि को

भजुरेतुलसी रघुनाथ अनाथ के नाथसही ५१ कौशिक बिप्रबधू मिथिलाधिपके सब शोचदले पलमाहैं । बालि दशानन बंधु कथा सुनि शत्रु सुसाहिब शील सराहैं ॥ ऐसी अनूपकहै तुलसी रघुनायक की अगुणी गुणगाहैं। आरतदीन अनाथन को रघुनाथ अरे निजहाथ न छाहैं ५२ तेरे बेसाहे बेसाहत औरनि और बेसाहिके बेंचन हारे । ब्योम रसातल भूमिभरे नृप कूर कुसाहिबसे तिहुँखारे ॥ तुलसी त्यहि सेवत कौन मरे रजते लघुको करे मेरुतेभारे । स्वामि सुशील समर्थ सुजानसो तोसो तुही दशरत्थ दुलारे ५३ ॥ घनाक्षरी ॥ यातुधान भालु कपि केवट बिहंगजोजो पालेनाथ मद्यसो भयोसो काम काजको । आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमानि सेा सुभाउ महाराजको ॥ नाम तुलसीपै भोड़े भागते कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को । साहेब समर्थ दशरत्थके दयालदेव दूसरो न तोसो तुही आपनेकी लाजको ५४ महाबलीबालि दलिकायर सुकंठ कपिराज किये महाराजहो न काहूकामको । घात घात पातकी निशाचर शरणआये किये अंगीकार नाथ येतेबड़े बामको ॥ रायदशरत्थ के समर्थ तेरे नामलिये तुलसी से कूरको कहत जगराम को । आपने नेवाजेकी तौलाज महाराजको सुभाउ समुझत मन मुदित गुलाम को ५५ रूप शीलसिंधु गुणसिंधु बंधुदीन को दया निधान जान शनि वीरबाहु बालको । श्राद्धकियो गीध को सराहे फल सेवरी के शिलाशाप समन निबाह्यो

नेह कोलको ॥ तुलसीउ राउहोत रामको सुभाउ सुनि कोन बलिजाइ न बिकाइ बिनमोल को । ऐसेहु सुसाहब के जाको अनुरागन सेा बड़ेइ अभागो भागभाग लोभ लोलको ५६ शूरशिरताज महाराजनके महाराज जाको नामलेतही सुखतहोत ऊसरो । साहिब कहां जहानजा-नकीशसो सुजान सुमिरे कृपालके मरालहोत खूसरो ॥ केवट पषान यातुधान कपि भालुतारे अपनायो तुलसी सेा धींगधम धूसरो । बोलको अटलबाहँ कोपगारदीन बंधुदूबरेको दानिको दयानिधान दूसरो ५७ कीबेकोबि शोक लोकलोक पालहूतेसब कहूंकोउभयो चरवाहो कपि भालुको । पबिकोपहारकियो ख्यालहीकृपालराम बापुरो बिभीषण घरौंधाहोत बालको ॥ नामवोट लेतहीं निखोट होत खोटै राल चोट बिनु मोटपाइ भयो न निहालको । तुलसीकी बारबलि ढीलहोत शीलसिंधु बिगरी सुधारबे को दूसरो दयालको ५८ नामलिये पूतको पुनीतकिये पातकी सुआरति नेवारी प्रभु पाहिकहे पीलकी । छलन की छोंड़ीसी निगोरी छोरीजातिपांति कीन्ही लीनआपमें भामिनी भोड़ी भीलकी ॥ तुलसी ओतारबो बिसारबो न अंतमोहूं नीकेहै प्रतीतिरावरे सुभाव शीलकी । देवतौ दयानिकेत देतदादि दीननकी मेरीबार मेरीही अभाग नाथ ढीलकी ५९ आगेपरे पाहन कृपा किरात कोलनि कपीस निशिचर अपनाय नाय माथजू । सांची सेवकाई हनुमान की सुजानराय ऋणिया कहायोहै बिकाने ताके हाथजू ॥ तुलसीसे खोटे खरेहोत ओटनामहीकी महँगी

माटीमगहूंकी मृगमद साथजू । बातचले बातको न मानिबो बिलग बलि काकीसेवा रीझिकै नेवाजे रघुनाथजू ६० कौशिककी चलती पषानकी परसपाइ टूटत धनुष बनिगईहै जनककी। कोलषणसवरी बिहंगभालुरातिचर रतिनके लालचिन प्रापति मनककी ॥ कोटिकलाकुशल कृपालतन पालत न बातहूं कितेक तृण तुलसी तनक की। रायदशरत्थ के समर्थ राम राजमणि तेरेहेरे लोपै लिपि बिधिहूंगनककी ६१ शिलाशाप पाप गुह गीधको मिलाप सेवरीकेबापआप बलिगयहौसो सुनीमैं । सेवक सराहे कपिनायक बिभीषणको भरतसभा सादर सनेह सुरधुनीमैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथ पाल साहब समर्थएक नीकेमन गुनीमैं । दोषदुख दारिददलैया दीनबंधु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनीमैं ६२ मीतबालिबंधुपूत दूतदशकंधबंधु सचिव सराधसाध सेवरीजटाइको। लकजरी जोहैजिय शोचसो बिभीषणको कहौ ऐसे साहबकी सेवा न खटाइको ॥ बड़े यक यक ते अनेक लोक लोकनाथ अपने अपने कीतौ कहैगो घटाइको। सांकरेको सेइबो सराहबे सुमिरिबेको रामसो न साहब न कुमतिकटाइको ६३ भूमिपाल ब्यालपाल लोकपाल नाकपाल कारण कृपालमैं सबैकेजीकी थाहली। कादरको आदर काहूकेनाहीं देखियत सबन सोहातहै सेवा सुजान टाहली ॥ तुलसी सुभायकहै नहींकछुपक्ष पातकौने ईश किय कीशभालु खास माहली। रामही के द्वारेपै बुलाइ सनमानियत मोसेदीन दूबरे कपूतकूर का-

हली ६४ सेवा अनरूपफल देतभूप ज्यों बिहीने गुण पथिक पियासेजात पथके । लेखे जोखे चोखेचित तुलसी स्वारथ हितनीके देखे देवता देवैया गुण गथके ॥ गीध मानो गुरुकपि भालु मानो मीतके पुनीत गीत साके सब साहब समर्थके । और भूप परखि सुलखि तौलि साईलेत लसमके खसम तुही पै दशरत्थके ६५ रीति महाराज की निवाजिये जो मांगनो सेा दोष दुख दारिद दरिद्र कैकै छोड़िये । नाम जाको काम तरुदेत फल चारि ताहि तुलसी बिहाइकै बबूर रेंड़ गोड़िये । यांचैको नरेश देशदेशको कलेश करैं देहैं तौ प्रसन्नह्वै बड़ी बड़ाइ बोड़िये ॥ कृपा पाथनाथ लोकनाथ नाथ सीतानाथ तजि रघुनाथ हाथ और काहि ओड़िये ६६ सवैया ॥ जाके बिलोके ते लोकप होत विशोक लहै सुरलोक सुठौरहि । सो कमला तजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवे शिर मौरहि ॥ ताको कहाइ कहै तुलसी तू लजाहि न मांगत कूकुर कौरहि । जानकी जीवन को जनह्वै जरि जाउ सो जीह जो यांचत औरहि ६७ जड़ पंचमिलै जेहि देह करी करनी देखुधौं धरनी धरकी । जनकी कहु क्यों करिहै न सँभार जो सार करै सचराचरकी ॥ तुलसी कहु राम समान को आनहै सेवकि जासु रमाघरकी । जगमें गति जाहि जगत्पतिकी परवाहि सेा ताहि कहा नरकी ६८ जग यांचिय कोउ न यांचिय जो जिय यांचिय जानकि जानहिरे । जेहि यांचत यांचकता जरि जाइ जो जोरत जोर जहानहिरे ॥ गति देखु बिचारि बिभीषणकी अरु

आनि हिये हनुमानहिरे । तुलसी भजुदारिद दोष दवा-
नल संकट कोटि कृपानहिरे ६९ सुनु कान दिये नित
नेम लिये रघुनाथहिके गुण गाथहिरे । सुख मंदिर सुंदर
रूप सदा उर आनि धरे धनु भाथहिरे ॥ रसना निशि
बासर सादर सो तुलसी जपु जानकी नाथहिरे । करु
संग सुशील सुसंतन सो तजि क्रूर कुपंथ कुसाथहिरे ७०
सुतदार अगार सखा परिवार बिलोकु महा कुसमाजहि
रे । सबकी ममता तजिकै समता सजि संत सभा न
बिराजहिरे ॥ नरदेह कहा करि देखु बिचार गँवार बि-
गारन काजहिरे । जनि डोलहि लोलुप कूकुरज्यों तुलसी
भजु कौशलराजहिरे ७१ बिषया परनारि निशातरुणाइ
सेा पाइ पर्‌यो अनुरागहिरे । यमके पहरू दुख रोग
बियोग बिलोकतहूं न बिरागहिरे ॥ ममता बश ते सब
भूलिगयो भयो भोर महा भय भागहिरे । जरठाई दशा
रविकाल उयो अजहूं जड़ जीव न जागहिरे ७२ जनम्यों
जेहि योनि अनेक क्रिया सुख लागि करी न परै बरणी ।
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहारि भई उरकी जर
णी ॥ तुलसी अब रामको दास कहाय हिये धरु चातक
की धरणी । करि हंसको बष बड़ो सबते तजि धौं बक
बायसकी करणी ७३ भलि भारत भूमि भले कुलजन्म
समाज शरीर भली लहिकै । ममता करषातजिकै बरषा
हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥ जो भजै भगवान सयान
सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै । न तो और सबै
बिष बीजबये हर हाटक का मधुका नहिकै ७४ सो सु-

कृती शुचिमंत सुसंत सुजान सुशील शिरोमणिस्वै। सुर तीरथ तासु मनावत आवत पाप न होतहै तातन छ्वै॥ गुण गेह सनेहको भाजनसो सबहीसों उठाइ कहौं भुज ह्वै। मति भाव सदा छल छांड़ि सबै तुलसी जो रहै रघुबीर को ह्वै ७५ सेा जननी सेा पिता सेाइ भ्रात सेा भामिनि सेा सुतसेा हितमेरा। सेाइ सगेा सेासखा सेाइ सेवक सेा गुरसेा सुर साहिबचेरा॥ सेातुलसी प्रियप्राण समान कहां लौ बनाइ कहौं बहुतेरो। जो तजि देह को गेहको नेह सनेह सो रामको होइ सबेरो ७६ राम हैं मात पिता सुत बंधु औसंगी सखा गुरु स्वामि सनेही। राम कि सौंह भरोसोहै रामको राम रँगीरुचि राचो न केही॥ जीवतराम मुयेपुनि राम सदा रघुनाथहि की गतिजेही। सोईजियै जगमें तुलसो नतडोलत औरमुये धरदेही ७७ सियराम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीननको जलुहै। श्रुति रामकथा मुख रामकोनाम हिये पुनि रामहिको थलुहै॥ मतिरामहि सो गतिरामहिसो रतिरामसो रामहिको बलुहै। सबकी न कहै तुलसीके मते यतनो जगजीवन को फलुहै ७८ दशरत्थ के दानि शिरोमणि राम पुराण प्रसिद्ध सुन्यो यशमें। नरनाग सुरासुर याचकजो तुमसों मनभावत पावनमें॥ तुलसी करजोरि करै बिनती जो कृपाकरि दीनदयाल सुनै। जेहि देह सनेह न रावरेसों ऐसीदेह धराइकै काहजनै ७९ झूठोहै झूठोहै झूठोसदा जगसंत कहंत जे अंतलहा है। ताकोसहै शठसंकट कोटिक काढ़तदंत करंत हहाहै॥

जानपनीको गुमानबड़ो तुलसीके बिचार गँवारमहाहै। जानकी जीवन जानन जान्यो तो जान कहावत जान कहाहै ८० तिनते खरशूकर श्वानभले जड़ता बशते न कहैं कछुवै। तुलसी जेहिरामसों नेहनहीं सो सहीबिनु पूंछ बिषानन द्वै॥ जननी कतभार मुई दशमास भई किनबांझ गईकिनह्वै। जरिजाउसो जीवन जानकीनाथ जियेजगमें तुम्हरोबिनुह्वै ८१ गजबाजि घटा भलेभूरि भटा वनिता सुतभौंहतके सबकै। धरणी धनधाम शरीर भलो सुरलोकहुं चाहिइहै सुखस्वै॥ सबफोटक साकट है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिनह्वै। जरिजाउसो जीवन जानकीनाथ जियेजगमें तुम्हरोबिनुह्वै ८२ सुर राजसो राजसमाज समृद्धि बिरंचि धनाधिप सोधन भो। भव मानसो पावक सो यमसोम सो पूषनसो भव भूषनभो॥ करियोगसमाधि समीरन साधिकै धीर बड़ो बसहूंमनभो। सबजाय सुभायकहै तुलसीजो न जानकी जीवनको जनभो ८३ काममेंरूप प्रताप दिनेशसे सोम से शील गणेशसे माने। हरिचंद से सांचे बड़ेबिधिसे मघवासे महीप विषय सुखसाने॥ शुकसे मुनि शारद सेवकता चिरजीवन लोमशते अधिकाने। ऐसे भये तो कहातुलसी जोपै राजिवलोचन राम न जाने ८४ झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर जड़े मदअम्बु चुचाते। तीषे तुरंग मनोगति चंचल पौनकेगौनहुंते बढ़िजाते॥ भीतर चंद्रमुखी अवलोकति बाहिर भूप खड़े न समाते। ऐसे भयेतौ कहातुलसी जोपै जानकिनाथ के रंगनराते ८५

राजसुरेश पचाशक को विधिके करको जो पटोलिखि पाये। पूतसपूत पुनीतप्रिया निज सुंदरता रतिको मद नाये॥ संपति सिद्धिसबै तुलसी मनकी मनसा चितवै चितलाये। जानकि जीवन जानेबिना जनऐसेउ जीवन जीवतजाये ८६ कृशगात ललातजो रोटिनको घरबात खरी खुरपा खरिया। तिनसोने के मेरु से ढेरलहो मनतौ न भर्‌यो घरपै भरिया॥ तुलसी दुखदूनो दशा दुहुंदेखि कियो मुख दारिद को करिया। तजिआशभो दास रघूपति के दशरत्थ के दानिदया दरिया ८७ को भरिहै हरिके रितये रितवै पुनिकोहरि जो भरिकै। उथपै तेहिको जेहि रामथपै थपिहै तेहिको हरिजोटरि है॥ तुलसी यह जानि हियेअपने सपने नहिं कालहुसे डरिहै। कुमया कछु हानि न औरन की जोपै जानकी नाथ कृपा करिहै ८८ ब्याल कराल महाबिष पावक मत्त गयन्दनके रद तोरे। शासति शंक चली डरपै हुते किंकरते करणी मुखमोरे॥ नेकु बिषाद नहीं प्रहलादहि कारणके हरि केवल होरे। कौनकी त्रासकरै तुलसी जोपै राखिहैं राम तौ मारिहैं कोरे ८६ कृपा जेहिकी कछु काज नहीं न अकाज कछू जेहिके मुख मोरे। करै तिनकी परवाहि को जाहि बिधान न पूंछ फिरै दिनदोरे॥ तुलसी जेहिके रघुबीर से नाथ समर्थ सो सेवत रीझत थोरे। कहा भव भीर परी तेहि धौं बिचरैं धरनी तिनसों तृण तोरे ६० कानन भूधर बारिबयारि महाबिष ब्याधि दवा अरि घेरे। संकट कोटि जहां तुलसी सुत मातपिता

हित बंधु न मेरे ॥ राखिहैं रामकृपाल तहां हनुमान से सेवकहैं जेहि केरे । नाक रसातल भूतलमें रघुनायकएक सहायक मेरे ९१ जबहीं यमराज रजायसुते मोहिं लै चलिहैं भट बांधि नटैया । तब तात न मात न स्वामि सखा सुत बन्धु बिशाल बिपत्ति बटैया ॥ शासति घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुंओर डटैया । एक कृपाल तहां तुलसी दशरत्थ के नन्दन बन्दिकटैया ९२ जहां यम यातन घोरनदी भट कोटि जलज्वर दंत टेवैया । जहँ धार भयंकर वार न पार न बोहित नाव न मीतखेवैया ॥ तुलसी जहँ मातु पिता न सखा नहिं कोऊ कहूं अवलंब देवैया । तहां बिनु कारण रामकृपाल बिशाल भुजागहि काढ़ि लेवैया ९३ जहां हित स्वामि न संग सखा बनिता सुत बंधु न बाप न मैया । काय गिरा मनके जनके अपराध सबै कुलकानि क्षमैया ॥ तुलसी त्यहिकाल कृपाल बिना दुजो कौनहै दारुण दुःख दमैया । जहां सबसंकट दुर्घट शोच तहांमेरो साहिब राखै रमैया ९४ तापसको बरदायक देव सबै पुनिबैर बढ़ावत बाढ़े । थोरेहीकोप कृपापुनि थोरेही बैठिकै जोरत तोरतठाढ़े ॥ ठोंकिबजाइ लियो गजराज कहां लौं कहौं केसोरद काढ़े । आरतके हित नाथ अनाथ के राम सहाय सही दिनगाढ़े ९५ जपयोग बिराग महा मख साधन दानदयादम कोटि करै । मुनिसिद्ध सुरेश महेश गणेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥ निगमागम ज्ञानपुराणपढ़ै तपसानलमें युग पुंज जरै । मनसो पन रोपिकहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख

कौनहरै ९६ पातकपीन कुदारिद दीन मलीनधरै क-
थरी करवाहै । लोककहै बिधिहूं न लिख्यो सपनेहु नहीं
अपने बरवाहै ॥ रामको किंकरसो तुलसी समुझेहोभलो
कहबो नरवाहै । ऐसोको ऐसो भयो कबहूं न भजे बिनु
बानरको चरवाहै ९७ मात पिता जगजाय तज्यो बि-
धिहूं न लिख्यो कछुभाल भलाई । नीचनिरादर भाजन
कादर कूकुर टूकन लागिललाई ॥ राम सुभाव सुन्यो
तुलसी प्रभुसों कह्यो बारक पेटखलाई । स्वारथको पर-
मारथको रघुनाथ सो साहेब खोरिन लाई ९८ पापहरे
परितापहरे तन पूजिभो हीतल शीतलताई । हंसकियो
बकते बलिजाउँ कहांलौ कहौं करुणा अधिकाई ॥ काल
बिलोकि कहै तुलसी मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ।
जन्म जहां तहँ रावरो सो निबहै भरिदेह सनेह सगाई
९९ लोककहै अरु होंहूं कहूं जन खोटोखरो रघुनायक
हीको । रावरी राम बड़ी लघुता यशमेरो भयो सुख-
दायकही को ॥ कै यह हानि सहौ बलिजाउँ कि मोहूं
करो निज लायक हीको । आनि हिये हित जानि करो
चाहो ध्यान धरो धनुशायक हीको १०० आपुही आपु
को नीकेकै जानत रावरो राम बढ़ायो गढायो । कीरज्यों
नामरटै तुलसी सो कहैजग जानकिनाथ पढ़ायो ॥ सोइ
हैखेद जो वेद कहै न घटैजनजो रघुवीर बढ़ायो । हौंतौ
सदा खरको असवार तिहारेई नाम गयंद चढ़ायो १
घनाक्षरी ॥ क्षारते सँबारिकै पहारहूंते भारी कियोगारो
भयो पांचमें पुनीत पच्छ पाइकै । हौंतो जैसो तब तैसो

अब अधमाइकै कै भरो पेट राम रावरोई गुण गाइकै ॥ आपने निवाजेकी पै कीजैलाज महाराज मेरी ओरहेरि कैन बैठिये रिसाइकै । पालिकै कृपाल ब्यालबाल कोन मारिये औ काटिये न नाथ बिषहू कोरूख लाइकै २ वेदन पुरान गान जानौन बिज्ञान ज्ञान ध्यान धारनासमाधि साधन प्रबीनता । नाहिन बिराग योग यागभोग तुलसीके दया दान दूबरो हौं पापहीकी पीनता । लोभ मोह कामकोह दोष कोश मोसोंकौन कलिहूं सिखिलाई मेरी ऐमलीनता । एकही भरोसोराम रावरो कहावतहौं रावरे दयाल दीनबन्धु मेरी दीनता ३ रावरो कहावो गुणगावौं राम रावरोई रोटी ह्वैहौं पावौं राम रावरीहि कानिहौं । जानत जहान मन मेरेहूं गुमानबड़ो मानोमैं न दूसरो न मानत न मानिहौं ॥ पांचकी प्रतीति न भरो सोमोहिं आपनोई तुम अपनाइहो तबहिं परि जानिहौं। गढ़ि गुढ़ि छीलिछालि कुंद कैसी भाईबातै जैसी मुख कहौ तैसीजीय जब आनिहौं ४ बचन बिकार बहुकरत खुबार मन बिगत बिचार कलिमल को निधानुहै । राम को कहाइ नाम बेचिबेचि खाइ सेवा संगति न जाइ पाछिले कोउ पखानुहै ॥ तेहू तुलसी को लोग भलोभला कहै ताको दूसरो न हेतु एक नीकेको निदानु है । लोक रीति बिदित बिलोकियत जहां तहां स्वामिके सनेह श्वानहूको सनमानु है ५ स्वारथ को साजन समाज पर मारथ को मोसों दगाबाज दूसरो न जग जालहै । कै न आय करों न करोंगो करतूति भली लिखी न बिरंचिहू

भलाई भूलिभालहौं । रावरी शपथ राम नामहींकी गति मेरे इहां झूठो झूठो सो तिलोक तिहुंकाल है । तुलसीको भलोपै तुम्हारेही किये कृपाल कीजै न बिलंब बलिपानी भरी खालहै ६ रागको न साज न बिरागयोग यागजिय कायर न छांड़िदेत ठाटिबो कुठार को । मनो राज करत अकाज भयो आजुलगि चाहचारु चीरपैलहै न टूवाठाट को ॥ कियो करतार बड़े कूरको कृपाल अतिपायो नाम पारसहौं लालची बराटको । तुलसी की बाणी राम रावरे बनाई न तो धोबी कैसो कूकुर न घर को न घाटको ७ ऊंचो मनऊंची रुचिभाग नीचो निपटहि लोक रीति लायक न लंगर लवारहै । स्वारथ अगम परमारथ की कहा चली पेटकी कठिन जगजीवको जवारु है ॥ चाकरी न आकरी न खेती न बनिज भीष जानत न कूरकछु किसिम कवार है । तुलसी की बाजी राखी रामही के नाम नतो भेट पितरनसों न मुण्डहूमें बारहै ८ अपत उतार अपकार को अगार जग जाके छाहँछुये सहमत व्याध बाधको । पातक पुहुमि पालिबे को सहसानन कपटको पयोधि अपराधको ॥ तुलसीसे बामको भो दाहिनो दयानिधान सुनतसिहातसब सिद्धसाधुसाधुको । रामनामललित ललामकिये लाखनको बड़ोकूरकायर कपूतकौड़ीआधको ९ सबअँग हीन सबसाधन बिहीन मनबचन मलीन हीन कूर करतूति हौं । बुधिबल हीन भाव भगति बिहीन दीन गुणज्ञान हीन हीन भागहूं बिभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गई बहोर रामनाम जाहिजपि जीहरामहूंको

बैठो धूतिहौं । प्रीति रामनामसे प्रतीति रामनाम की प्रसाद राम नामके पसारि पाइँ सूतिहौं १० मेरेजानि जबतेहौं जीवह्वै जनम्योजग तबते बेसाह्यो दाम लोह कोह कामको । मन तिनहींको सेवातिनहींसो भावनीक बचन बनाइकहौं होंगुलामरामको ॥ नाथहूं न अपनायो लोकरूढ़ी ह्वैपरीये प्रभुहूते प्रबल प्रतापप्रभु नाम को । अपनी भलाईभलो कीजेतौ भलाई भलो तुलसीको खलै तो खजानो खोटे दामको ११ योग न बिरागजप याग तप त्यागब्रत तीरथ न धर्मजानों वेदबिधि किमिहै । तुलसीसो पोचनभयोहै नहिंङ्कैहैकहूं शोचैंसब याकेअघकैसे प्रभु क्षमिहै ॥ मेरेतौ न डर रघुबीरसुनों सांचीकहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जन निगमिहै । भले सुकृती के संग मोहिं तुला तोलिये तौ नामकेप्रसादभार मेरीओरनमिहै १२जातिके कुजातिके अजातिके पेटागिबश खायेटूक सब के बिदित बात दुनीसो । मानस बचनकाय किये पाप सतिभाय रामको कहायदास दगाबाज पुनीसो ॥ राम नामकोप्रभाव बाउमहिमा प्रतापतुलसीसो जगमानियत महा सुनीसो । अतिही अभागो अनुरागत न रामपद मूढ़ येतबड़ो अचरज देखि सुनीसो १३ जायो कुलमंगन वधावनो बजायो सुनि भयो परिताप पाप जननी जनकको । बारेते ललात बिललात द्वार द्वार दीन जान तहौं चारि फल चारिहि चनकको ॥ तुलसी सो साहिब समर्थको सुसेवकहि सुनत सिहात शोच बिधिहूं गनक को ॥ नाम राम रावरो सयानो किधौं बावरो जो करत

गिरिते गरूतृणते तनकको १४ बेदहूं पुराण कही लोकहूं बिलोकियत रामनाम हीसों रीझे सकल भलाई है। काशीहुं मरत उपदेशत महेश सोई साधन अनेक चितई न चितलाईहै॥ छाँछिको ललात जेते रामनाम के प्रसाद गत खुनसात शोधे दूधकी मलाईहै। राम राज सुनियत राजनीति की अवधि नाम राम रावरे तो चाम की चलाई है १५ शोच संकटनिशोच संकट परत जर जरत प्रभाउ नाम ललित ललामको। बूड़ियो तरत बिगरियो सुधरति बातहोत देखि दाहिनो सुभाउबिधि बामको॥ भागत अभाग अनुराग सुबिरागभाग जागत अलस तुलसीहूंसे निकामको। धाइ धरि फिरिकै गोहारि हितकारी होतआई मीच मिटत जपत रामनाम को १६ आंधरो अधम जड़ जाजरो जराज मन शूकर के सावक ढका ढकेलो मगमें। गिर्‌यो हिये हहरि हराम होह राम हन्यो हाइ हाइकरत परिगो कालफंग में। तुलसी बिशोक ह्वै तिलोकपति लोक गयो नामके प्रताप बात बिदितहै जगमें॥ सोई रामनाम जो सनेह सोंजपत जनताकी महिमाको क्यों कहीहै जातअगमें १७ जपकी न तप खप कियो न तमाई योग योगन बिराग त्यागतीरथनतनको। भाईको भरोसो न खरोसो बैरबैरी हूंसो बल अपनो न हित जननी जनकको॥ लोकको न डर परलोकको न शोच देवसेवा न सहायगर्ब धामको न न धनको। रामहींके नामते जोहोइ सोइ नीकीलागै ऐसोइ स्वभाव कछु तुलसीके मनको १८ ईश न गणेश न दि-

नेश न सुरेशसुर गौरगिरापति नहिंतन जपौं जपने। तुम्हरोई नामको भरोसो भवतरिबेको बैठे उठे जागत बागत सुखसपने ॥ तुलसीहै बावरो सो रावरोई रावरी सों रावरेहूं जानिजिय कीजिये जअपने । जानकी जी वनमेरे रावरे बदनफेरे ठाउँ न समाउँ कहुं सकल निरपने १६ जाहिर जहानमें जमानो एकभांतिभयो बेंचिये बिबुध धेनु रासभी बेसाहिये। ऐसेउ कराल कलिकाल में कृपाल तेरे नामके प्रताप न त्रिताप तन दाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन बचन करमजन येहूनातोनेह निज औरते निबाहिये। रंकके निवाज रघुराज राजा राजन के उमिरि दराज महाराज तेरी चाहिये २० स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो रामरावरो हों जानत जहानहै । नामके प्रतापबाप आजलौं निबाही नीकी आगेको गोसाईं स्वामी सबलसुजानहै ॥ कलिकी कुचालदेखि दिनदिन दूनीदेव पाहरुईचोर हेरिहिय हहरानुहै। तुलसीकीबलि बारबारहीं सम्हारकीवो यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है २१ दिन दिन दूनी देखि दारिद दुकालदुख दुरित दुराज सुखसुकृत सकोचहै। मांगेपै तपावत प्रचारि पातकी प्रचंड कालकी करालता भलेको होतपोचहै ॥ आपने तो एक अवलंब अबईभज्यो समर्थ सीतानाथ सबसंकट बिमोचहै। तुलसी की साहससराहिये कृपाल राम नामके भरोसे परिनाम कोनिशोचहै २२ मोह मदमातो रातो कुमति कुनारिसो बिसारि बेद लोक लाज आकरो अचेतहै। भावै सो करत

मुख आवै सो कहत कछु काहूकी सहत नाहिं सरकस डेतुहै ॥ तुलसी अधिक अधमाई हूं अजामिल ते ताहू में सहाय कलि कपट निकेत है । जैबे की अनेक टेक एक टेक ह्वैबेकी सो पेट प्रिय पूत हित राम नाम लेत है २३ जागिये न सोइये बिगोइये जनम जाइ दिन दुख रोइये कलेश कोह काम को । राजा रंक रागी औ बिरागी भूरि भागीये अभागी जीव जरत प्रभाउ कलि बाम को ॥ तुलसी कबंध कैसो धाइबो बिचारु अंध धुंध देखियत जग शोच परिनामको । सोइबो जो राम के सनेह को समाधि सुख जागिबो जो जीह जपै नीके राम नामको २४ बरन धरमगयो आश्रमनिबासतज्यो त्रासन चकित सोपरावनो परोसोहै । परम उपासना कुबासनाबिनाशो ज्ञान बचन बिराग बेष जगत हरोसो है ॥ गोरख जगाया योग भगति भगायो लोग निगम नियोगते सो कलिहि छरोसोहै । कायमन बचन सुभाय तुलसीहैजाहि राम नामको भरोसो ताहीको भरोसोहै २५ सवैया ॥ वेद पुरान बिहाइ सुपंथ कुमारग कोटि कुचालि चलीहै । कालकराल नृपाल कृपालनराज समाज बड़ोइछलीहै ॥ बर्न बिभागन आश्रमधर्म दुनी दुख दोषदरिद्र दलीहै । स्वारथको परमारथको कलि राम को नाम प्रताप बली है२६नमिटै भवसंकट दुर्घटहैतपतीरथ जन्मअनेक अटौ । कलिमें न बिराग न ज्ञानकहूं सब लागत फोकट झूंठ जटौ ॥ नट ज्यों निजपेट कुपटक कोटिक चेटक कौतुक ठाटठटौ । तुलसी जो सदासुख चाहिये तो रसना निशि

वासर रामरटौ २७ दमदुर्गम दानदया मखकर्म सुधर्म अधीन सबै धनको । तपतीरथ साधन योगविराग सो होइनहीं दृढ़ता तनको ॥ कलिकाल करालमें राम कृपा लइहै अवलंब बड़ी मनको । तुलसी सब सँय्यम हीन सबै यकनाम अधार सदाजनको २८ पाइ सुदेह बिदेह नदीतरणी न लही करणी न कछूकी । रामकथा बरणी न बनाइ सुनी न कथा प्रह्लाद न ध्रूकी ॥ अबजोर जरा जरि गातगये मनमानि गलानि कुबानि न मूकी । नीके कै ठीकदई तुलसी अवलंब बड़ी उर आखरदूकी २९ रामबिहाइ मराजपते बिगरी सुधरी कबि कोकिलहूकी । नामहिते गजकी गणिकाहु अजामिल की चलिगै चल चूकी ॥ राम प्रताप बड़े कुसभा जबजाइ रही पतिपंडु बधूकी । ताकोभलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीतिप्रतीति है आखरदूकी ३० नाम अजामिलसे खल तारण तारण वारण बारबधूको । नामहरे प्रहलाद विषाद पिता भय शासति सागरसूको ॥ नामसों प्रीति प्रतीति बिहीन गिलो कलिकाल कराल न चूको । राखिहैं रामसो जासु हिये तुलसी हुलशै बल आखरदूको ३१ ॥ घनाक्षरी ॥ खेती न किसान को भिषारीको न भीषबलि बणिक को बणिज न चाकर को चाकरी । जीविका बिहीन लोग विद्यमान शोचबश कहै एक एकनसों कहांजाइ काकरी ॥ बेदहूं पुराण कहा लोकहूं बिलोकयत सांकरे सबैको रामरावरे कृपाकरी । दारिददशानन दबाईदुनी दीनबंधु दुरितदहतदेखि तुलसीहहाकरी ३२ कुलकरतूति भूति

कीरति सरूप गुणयोबनज्वर जरत परतन कछू कही। राजकाज कुपथ कुसाजभोग रोगहीकेबेदबुध बिद्यापाइ बिबशबलकही। गति तुलसीशकी लखत नहिंजो तुरत पबिते करत क्षारपबि सो पलकही। कासोंकीजै रोषदोष दीजैकाहि पाहिराम कियो कलिकाल कुलि खललखल कही ३३ बबुरबहेरेको बनाइ बागलाइयत रूंधवेकोसो ऊसुरतरु काटियतहै। गारीदेत नीचहरिचंदहू दधीच हूको आपने चनाचबाइहाथ चाटियतहै। आपु महापात की हँसत हरिहरहूको आपुहै अभागी भूरिभागी डाटिय तहै। कलिकीकलुषमन मलिनकियेकहत मसककी पांसु-रीपयोधि पाटियत है ३४ सुनियेकराल कलिकाल भूमि पालतुम जाहिघालो चाहिये कहोधौं राखैताहिको। हौं तो दीन दूबरो बिगारों ढारोंरावरो नमैहूं तैहूंताहिको सकलजगजाहिको। कामको हलाइकै देखाइयत आंखि मोहिं येतेमान अकसकीबे कोआपु आहिको। साहिब सुजान जिनश्वानहूंको पक्ष कियो राम बोला नाम हौं गुलाम राम साहिको ३५ सवैया ॥ सांची कहौ कलि काल करालमें डारौं बिगारो तिहारो कहाहै। कामको लोभको क्रोधको मोह को मोहीं सो आनि प्रपंच रहा है ॥ हौंजगनायक लायकआजु पैमेरीयो टेवकुटेवमहाहै। जानकीनाथ बिना तुलसी जगदूसरेसो करिहै न हहाहै ३६ भागीरथी जलपान करौं अरु नाम द्वै रामं के लेत नितैहौं। मोसों न लेनो न देनोकछू कलि भूलि न रा-वरे ओर चितैहौं ॥ जानिकै जोरिकरौं परिणाम तुम्हैं

पछितैहों पै मैं न भितैहौं । ब्राह्मण ज्यों उगिल्यो उरगारिहों त्योहीं तिहारे हिये न हितैहौं ३७ राजमराल के बालक पेलिकै पालत लालत खूसरको । शुचि सुंदर सालिसकेलि सँवारिकै बीज बटोरत ऊसरको ॥ गुण ज्ञान गुमान भभेरिबड़ो कल्पद्रुमकाटत मूसरको । कलि काल बिचार अचारहरी सूझैनकछू धम धूसरको ३८ कवि कहा पढ़िवेको कहा फल बूझिनबेदको भेद बिचार्यो । स्वारथको परमारथको कलिकामद रामको नाम बिसार्यो ॥ बादबिवाद बिषाद बढ़ाइकै छाती पराई औ आपनी जार्यो । चारिहूको छहुको नवको दश आठ को पाठ कुकाठज्यों फार्यो ३९ आगम बेदपुराण बखानत कोटिक मारग जाहि न जाने । जेमुनिते पुनि आपुहि आपुको ईश कहावत सिद्धसयाने ॥ धर्मसबै कलि काल ग्रसे जप योग बिराग लै जीव पराने । को करि शोचमरै तुलसी हम जानकिनाथ के हाथ बिकाने ४० धूतकहौ अवधूतकहौ रजपूतकहौ जोलहा कहौ कोऊ । काहूके बेटीसों बेटा न ब्याहिहों काहूकीजात बिगारन सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलामहै रामको ताकोरुचैसो कहै कछुओऊ । मांगिकै खैबो मजीतको सोइबो लेबोन एक न देबेकोदोऊ ४१ घनाक्षरी ॥ मेरे जाति पांति न चहों काहूकीजाति पांतिमेरे कोउकामको न हौं काहूके कामको । लोकपरलोक रघुनाथहीके हाथ सबभारीहै भरोसो तुलसी के एक नामको ॥ अतिही अयाने उपखाने नहिं बूझैलोग साहेब के गोत गोतहोत है गुलामको ।

साधु कै असाधु कै भलोकै पोच शोचकहा काहूके दुआ-
रपर्‌यों जो हौं सोहौं रामको ४२ कोऊकहै करत कु-
साज दगाबाजबड़ो कोऊकहै रामकोगुलाम खरोखूबहै।
साधुजानै महासाधु खलजानै महाखलबानीझूठी सांचो
कोटि उठत हबूबहै ॥ चहत न काहूसो कहत न काहूको
कछु सबकी सहतउर अंतर न ऊबहै । तुलसीको भली
पोच हाथ रघुनाथहीके रामकी भगति भूमि मेरीसबदू-
बहै ४३ जागैं योगी जंगम यती जमाति ध्यानधरैं डरैं
डरभारी लोभमोह कोहकाम के। जागैं राजा राजकाज
सेवकसमाजसाज शोचैंसुनि समाचार बड़ेबैरी बामके॥
जागैंबुध बिद्याहित पण्डित चकितचित जागैं लोभीला-
लच धरणिधन धामके। जागैंभोगी भोगहि बियोगीरोगी
रोगबश सोवैसुख तुलसी भरोसे एक रामके ४४ छप्पै ॥
राम मातु पितुबंधु सुजनगुरु पूज्य परमहित । साहेब
सखा सहाइनेह नातो पुनीतचित ॥ देशकोशकुल कर्म
धर्म धन धाम धरणि गति। जातिपांति सब भांतिलागि
रामहिं हमारिमति ॥ परमारथ स्वारथसुयश सुलभ
रामते सकलफल । कहैतुलसीदास अबजब कबहुं एक
राम ते मोरभल ४५ महाराज बलिजाउँ रामसेवकसुख
दायक । महाराज बलिजाउँ रामसुंदरसबलायक ॥ महा
राज बलिजाउँरामसंकट सबमोचन। महाराज बलिजाउँ
रामराजीव बिलोचन॥ बलिजाउँ रामकरुणायतन प्रणत
पालपातकहरण। बलिजाउँ रामकलिभय बिकलतुलसि
दास राखियशरण ४६ जय ताड़कासुबाहु मथन मारीच

मानहर । मुनिमकरक्ष नदक्ष शिलातारण करुणाकर ॥ नृपगणबल मदसहित शंभु कोदंड बिहंडन । जयकुठार धर दर्प दलन दिनकर कुल मंडन ॥ जय जनक नगर आनंदप्रद सुखसागर सुखमा भवन । कहै तुलसिदास सुर मुकुटमणि जयजयजय जानकि रमन ४७ जय जयंत जयकरअनंत सज्जन जनरंजन । जयबिराध बध बिदुष बिबुध मुनिगण भयभंजन ॥ जय निशिचरी कु-रूपकरन रघुबंशबिभूषण । सुभट चतुर्दश सहस दलन त्रिशिरा खरदूषण ॥ जय दंडकबनपावन करन तुलसि दास संशयसमन । जगबिदित जगतमणि जयति जय जयजय जय जानकि रमन ४८ जय माया मृग मथन गीध सवरीउद्धारण । जयकबंध सूदनबिशाल तरुताल बिदारण ॥ दवनबालि बलशालि थपनसुग्रीव संतहित । कपिकराल भट भालु कटक पालक कृपालचित । जय सियबियोग दुखहेतु कृतसेतु बंध बारिधि दमन ॥ दश शीश बिभीषण अभयप्रद जयजयजय जानकिरमन ४९ कनक कुधर केदार बीज सुंदर सुर मुनिबर । सीचिका मधुक धेनु सुधामय पय बिशुद्धतर ॥ तीरथ पति अंकुर स्वरूप यक्षेश रक्षतेहि । मरकतमणि शाखासुपुत्र मंजरी सुलक्षिजेहि ॥ कैवल्य सकल फल कल्पतरु शुभसुभाउ सबसुख बरिस । कहै तुलसिदास रघुबंशमणि तौकि होहि तबकर सरिस ५० जाइसो सुभट समर्थपाइ रण रारि न मंडै । जाइसो यतीकहाइ बिषैबासना न छंडै ॥ जाइधनिक बिनुदान जाइ निर्धन बिनु धर्महि । जाइसो

पंडित पढ़िपुराण जो रत न सुकर्महि ॥ सुतजाइ मातु पितुभक्तिबिनु तियसोजाइ जेहिपति न हित। सबजाय दासतुलसी कहै जो न रामपद नेहनित ५१ कोनक्रोध निर्दहेउ कामबश केहिनहिं कीन्हो। कौन लोभ दृढ़फंद बांधित्रासन करिदीन्हो ॥ कवनहृदय नहिंलाग कठिन अतिनारि नयनशर। लोचनयुत नहिं भयउअंध श्रीपाइ कवननर ॥ सुर नागलोक महि मंडलहु सो जो मोह कीन्हो जयन। कहै तुलसिदास सो ऊपर जेहि राखु राम राजीव नयन ५२ सवैया॥ भौंहकमान सँधान सुठानजो नारि बिलोकनि बाण ते बांचै। कोप कृशानु गुमान अवाघट जे जिनकेमन आँच न आँचै ॥ लोभसबै नटकेबशह्वै कपि ज्यों जगमें बहुनाच न नांचै। नीकेहैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुबीर के सेवक सांचै ५३ घनाक्षरी ॥ बेष सुबनाइ भले बचन कहै चुपाइ जाइ तौ न जरनि धरणि धनधाम की। कोटिक उपाइकरि लालि पालियत देहमुख कहियत गति रामहीके नाम की। प्रगटै उपासना दुरावै दुर्बासनाहि मानस नेवास भूमि लोभ मोह कामकी। रागरोष ईर्षाकपट कुटिलाई भरे तुलसीसे भगत भगतिचाहैं रामकी ५४ कालिही तरुणतन कालिही धरणि धन कालिही जितोंगोरण कहत कुचालि है। कालिही साधोंगो काज कालिही राजा समाज मोसों कोउ कहा भारे मही मेरु हालिहै ॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये घने घर घालत है घने घर घालिहै। देखत सुनत समुझतहू न सूझै

सोई कबहूं कह्यो न कालहू को काल कालिहै ५५ भयो न तिकाल तिहू लोक तुलसी सो मंद नींदै सब साधु सुनि मानो न सकोचहौं। जानत न योगहिय हानिमानै जानकीश काहेको परेखोहौं पापी प्रपंची पोचहौं ॥ पेट भरिबे के काज महाराज को कहायो महाराजहूं कह्योहै प्रणत बिमोचहौं। निज अघ जाल कलिकालकी कराल ता बिलोकि होत ब्याकुल करत सोई शोचहौं ५६ धरम को सेतुजग जंगलको हेतु भूमि भार हरिबेको अवतार लियो नरको। नीति औ प्रतीति प्रीति पाल चालि प्रभु मान लोक वेद राखिबेको पन रघुबरको ॥ बानर बिभीषणकी औरको कनावड़ोहै सो प्रसंग सुने अंग जरै अनुचरको। राखे रीति आपनी जो होइ सोइ कीजै बलि तुलसी तिहारो घर जाइ डहै घरको ५७ नाम महाराज के निबाही नीकी कीजै उर सबही सोहात मैं न लोगन सोहातहौं। कीजै राम बार एही मेरी ओर चष कोर ताहि लगि रंक ज्यों सनेहको ललातहौं ॥ तुलसी बिलोकि कलिकालकी करालता कृपालको सुभाउ समुझत सकुचातहौं। लोक एक भांतिको त्रिलोकनाथ लोक बश आपनो न शोच स्वामी शोचही सुखातहौं ५८ तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लवार बारबार लालच धरणि धन धामको। तबलौं बियोग रोग शोग भोग यातनाके युग सम लागत जीवन याम यामको ॥ तौलौं दुख दारिद दाहत अति नित तन तुलसी हैं किंकर बिमाह कोह कामको। सब दुख आपने निरापने सकल

सुख जौलौं जन भयो न बजाइ राजारामको ५९ तौलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहां तहां दुखी जन भाजन कलेशको । तौलौं उबेन पाय हित पेटौ खलाय बाये मुह सहत पराभव देश देशको ॥ तबलौं दयावनो दुसहदुख दारिदको सांथरीको सोइबो ओढ़िबो दूनेखेश को । जबलौं न भजै जीह जानकी जीवन राम राजनको राजासो तो साहेब महेशको ६० ईशनके ईश महाराजन के महाराज देवनके देव देव प्रानहूंके प्रानहौ । कालहुं के काल महाभूतन के महाभूत कर्महूंके करम निदानके निदानहौ ॥ निगमको अगम सुगम तुलसीहूसे को एते मान शीलसिंधु करुणा निधानहौ । महिमा अपार काहू बोलको न वारापार बड़ी साहिबीमें नाथ बड़े सावधान हौ ६१ सवैया ॥ आरत पाल कृपाल जेराम जेहि सुमिरे तेहिको तहँ ठाढ़े । नाम प्रताप महा महिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े ॥ सेवक एकते एक अनेक भये तुलसी तिहूं तापन डाढ़े । प्रेम बदौं प्रह्लादहिको जिन पाहन ते परमेश्वर काढ़े ६२ काढ़ि कृपान कृपान कहूं पितुकाल कराल बिलोकि न भागे । राम कहां सब ठाउँहैं खंभमें हां सुनि हांकनिके हरि जागे ॥ बैरी बिदारि भये बिकराल कहै प्रह्लादहिके अनुरागे । प्रीति प्रतीति बढ़ी तुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे ६३ अंतर्य्यामि हुते बड़े बाहेर जामिहै राम जेनाम लियेते । धावत धेनु पन्हाइ लवाइ ज्यों बालक बोलनि कान कियेते ॥ आपनि बूझि कहै तुलसी कहिबेकी न बावरि बात बियेते ।

पै जुपुरे प्रह्लादहुको प्रगटे प्रभु पाहनते न ह्वियेते ६४ बालक बोलिदियो बलिकाल को कायर कोटि कुचाल चलाई । पापीहै बाप बड़ो परितापते आपनी ओरते खोरिनलाई ॥ भूरिदई बिषमूरि भई प्रह्लाद सुधाई सुधाकी मलाई । रामकृपा तुलसीजनको जगहोत भले को भलोई भलाई ६५ कंसकरी ब्रजबासिनपै करतूति कुभांतिचले न चलाई । पंडुकेपूत सपूत कपूत सुयोधन भो कलि छोटोछलाई ॥ कान्हकृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीचखलाई । ठीकप्रतीति कहैं तुलसी जग होइ भलेको भलोई भलाई ६६ अवनीश अनेक भये अवनी जिनके डरते सुर शोच सुखाहीं । मानव दानव देव सतावन रावण घाटिरच्यो जगमाहीं ॥ ते मिलये धरिधूरि सुयोधनजेचलते बहु छत्रकिछाहीं । बेदपुराण कहै जगजान गुमान गोबिंदहि भावत नाहीं ६७ जब नयनन प्रीतिठई ठग श्यामसों सयानि सखी हठिहौ बरजी । नहिंजानो बियोग सुरोगहैआगे झुकी तबहौं तोहिंसों तरजी ॥ अब देहभई पटनेह के घालेसों खोज करै बिरहा दरजी । ब्रजराज कुमार बिनासुनु भृङ्ग अनंगभयो जियको गरजी ६८ योगकथा पठई ब्रजको सबसों शठचेरीकी चाल चलाकी । ऊधोजू कौनकहै कुबरीजो बरी नटनागर हेरिहलाकी ॥ जाहिलगै परि जानै सोई तुलसीसो सोहागिनि नंदललाकी । जानीहै जानपनी हरिकी अब बांधियेगी कछु मोटकलाकी ६९ घनाक्षरी ॥ पठये है छपद छबीले कान्हकेहू कहूं खो-

जिकै खवास खासो कूबरीसो बालको । ज्ञानको गढ़ैया बिनुगिरा को पढ़ैया बारखाल को कढ़ैयासो बढ़ैया उर शालको ॥ प्रीतिकोबधिक रसरीतिके अधिक नीतनिपुण बिवेकहै निदेश देशकालको । तुलसीकहे न बनै सहेही बनैगी सब योगभयो योगको बियोग नंदलालको ७० हनुमानके कृपाल लाड़िले लषणलाल भावते भरतहैं जे सेवक सहायजू । बिनती करत दीनदूबरो दयावनो सों बिगरेते आपुही सुधारिलीजै भायजू ॥ मेरी साहि बिनासदा शीशपर बिलसतिदेवी को न दासको देखा इयत पायजू । झीखहू मेरीझिबेकी बाणि राम लगतहै रीझकैहै रामकी दोहाई रघुरायजू ७१ सवैया ॥ बेष विरागको रागभरो मनभाव कहौं सतिभावहौं तोसों । तेरेहीनाथको नामलैबेबिहौंपातकीपांवर प्राणनिपोसों॥ येतेबड़े अपराधी अधीकहूते कहौ अंबकिमेरोतू मोसों । स्वारथको परमारथ को परिपूरणभो फिरिघाट नहीं सों ७२ घनाक्षरी । जहां बालमीकि भये ब्याधते मुनीन्द्र साधु मरामरा जपे शिष सुनि ऋषिसातकी । सीयको निबास लवकुशको जनम थल तुलसी छुअतछाहँ ताप गरैगातकी ॥ बिटप महीप सुरसरित समीपसोहै सीता बटपेखत पुनीत होत पातकी । बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि अंकितजो जानकी चरण जल जातकी ७३ मरकत बरन परन फल मानिकसे लसै जटाजूट जनुरूपवेषहरहै । सुखमाको ढेरुकैधों सुकृत सुमेरुकैधों संपदासकल मुदमंगल को घरुहै ॥ देत अमिमत जो

समेतप्रीतिसेइये प्रतीतिमानि तुलसी बिचारिकाकोथरु
है। सुरसरि निकट सोहावनी अवनिसोहै रामराव नीके
बटकलि काम तरु है ७४ देवधुनी पास मुनिबास श्री
निवास जहां प्राकृतहूं बटबूट बसत पुरारिहै । योगजप
याग को बिराग को पुनीत पीठि रागिनपै सीठि डीठि
बाहरी निहारिहै ॥ आयसु आदेश बाबू भलो भलो भाव
सिद्ध तुलसी बिचारि योगी कहत पुकारिहै । राम भग-
तनको तो कामतरुते अधिक सीय बटसेये करतल फल
चारिहै ७५ जहां बनपावनो सोहावनो बिहंग मृगदेखि
अतिलागत अनंदखेतखूटसो । सीताराम लषण निवास
बास मुनिनको सिद्ध साधु साधक सबै बिबेक बूटसो ॥
झरना झरत बारि शीतल पुनीतबारि मंदाकिनि मंजुल
महेश जटाजूटसो । तुलसी जो रामसो सनेह सांचो चा-
हिये तो सेइये सनेह सों बिचित्र चित्रकूटसो ७६ मोह
बन कलिमल जरतजन जानिजिय साधुगाइ बिप्रनके
भयको निबारिहै । दीन्हीहै रजाइ राम पाइसो सहाय
लाल लषण समर्थ बीर हेरि हेरि मारिहै ॥ मंदाकिनि
मंजुल कमानअसि बाण जहां बारिधार धीरधरि सुकर
सुधारिहै । चित्रकूट अचल अहेरीबैठ्यो घातमानो पातक
के ब्रातघोर शावकसँहारिहै ७७ सवैया ॥ लागिदवारि
पहारढही लहकी कपिलंक यथा खिरखौकी । चारुचुवा
चहुंओर चली लपटैं झपटैसो तमीचर तौकी ॥ क्यों कहि
जात महासुखमा उपमा तकि ताकतहैं कबिकौकी । मा-
नोलसी तुलसी हनुमान हिये जगजीत जरायकी चौकी

७८ देवकहै अपनी अपनी अवलोकन तीरथ राजचलो रे। देखिमिटै अपराध अगाध निमज्जत साधु समाज भलोरे ॥ सोहै सितासितको मिलिबो तुलसी हुलशै हियहेरि हलोरे। मानोहरे तृण चारुचरैं बगरैं सुरधेनु कै धौलकलोरे ७९ देवनदीकहँ जोजनजान किये मनसा कुल कोटि उधा रे। देखि चलै झगरै सुरनारि सुरेश बनाइ बेवान सँवारे ॥ पूजाको साज बिरंचिरचै तुलसी जे महातम जाननि हारे। औंककी नेवपरी हरिलोक बिलोकत गंग तरंग तिहारे ८० ब्रह्म जो व्यापकबेद कहै गमनाहिं गिरा गुणज्ञान गुनीको। जो करता भरता हरतासुरराइ सुसाहिब दीनदुनीको॥ सोईभयो द्रव रूपसही जोहै नाथ बिरंचिमहेशमुनीको। मानिप्रतीति सदा तुलसी जनकाहे न सेवत देवधुनी को ८१ बारि तिहारो निहारि मुरारिभये परसेपद पाप लहौंगो। ईशकै शीशधरो पै डरौंप्रभुकी समता बड़ेदोष दहौंगो॥ बरु बारहिबार शरीरधरौं रघुबीरकोकै तबतीररहौंगो। भागीरथी बिनवौं करजोरि बहोरि न षोरिलगै सोकहौंगो ८२ घनाक्षरी ॥ लालची ललात बिललात द्वार द्वार दीन बदन मलीन मन मिटै न बिशूरना। ताकत सराधकै बिवाहकै उछाह कछु डोलैलोलबूझत शबदढोल तूरना॥प्यासे न पावहिंबारिभूखेन चनकचारिचहत अहारते पहारटारि धूरना ॥ शोकको अगार दुखभारभरै तौ लौंजौलों देवीद्रवै न भवानीअन्नपूरना ८३ छप्पै॥ भस्म अंगमर्दन अनंगसंतत असंगहर। शीश गंगगिरिजाऽर्धंग

भूषण भुजंगबर ॥ मुंडमाल बिधुबाल भाल डमरूकपाल कर । बिबुध वृंद नव कुमुद चंद सुख कंद शूल धर ॥ त्रिपुरारि त्रिलोचन दिग वसन बिष भोजन भव भय हरण । कहै तुलसिदास सेवत सुलभ शिव शिव शिव शंकर शरण ८४ गरल असन दिग बसन व्यसनभंजन जन रंजन । कुंद इंदु कर्प्पूर गौर सच्चिदानंद घन ॥ बिकट बेष उर शेष शीश सुरसरित सहज शुचि । शिव अकाम अभिराम धाम नित राम नाम रुचि ॥ कंदर्प्प दर्प दुर्गम दमन उमा रमण गुण भवनहर । त्रिपुरारि त्रिलोचन त्रिगुण पर त्रिपुर मथन जयत्रिदशबर ८५ अर्ध अंगअंगना महानाम योगीश योग पति । बिषम असन दिगबसन नाम बिश्वेश बिश्वगति ॥ कर कपाल शिर माल व्यालबिष भूति बिभूषण ॥ नामशुद्ध अबिरुद्ध अमर अनवद्य अदूषण । बिकराल भूत बैताल प्रिय भीम नाम भव भय दमन ॥ सब बिधि समर्थ महिमा अकत्थ सो तुलसिदास संशय समन ८६ भूत नाथ भय हरण भीम भय भवन भूमि धर । भानुमंत भगवंत भूति भूषण भुजंग बर ॥ भव्य भाव बल्लभ महेश भव भार बिभंजन । भूरि भाग भैरव कुयोग गंजन जन रंजन ॥ भारती बदन धर्म सदन शशि पतंग पावक नयन । कहै तुलसिदास किन भजसि मन भद्र सदन मर्दन मयन ८७ सवैया ॥ नांगो फिरै कहै मांगनो देखि न खांगो कछू जनि मांगिये थोरे । शंकनि नाकपरीझ करै तुलसी जग जो जुरै याचक जोरे ॥ नाक सँवारत आयोहौं नाकहि नाहिं पिनाकहि

नेकु निहोरे । बिरंचि कहै गिरिजा सिखवो पति रावरो दानहै बावरो भोरे ८८ बिष पावक व्याल कपाल गरे शरणागत तौ तिहुं तापन डाढ़े । भूत बैताल सखा भव नाम दलै पलमें भवके भय गाढ़े ॥ तुलसीश दरिद्र शिरोमणि सो सुमिरे दुख दारिद होहिं न ठाढ़े । भौन में भांग धतूरोइ आंगन नांगेके आगेहैं मांगने बाढ़े ८९ शीश बसै बरदा बरदानि चज्यो बरदा घरन्यो बरदाहै । धाम धतूरो बिभूति को कूरो निबास तहां सबलै मरदा है ॥ व्याली कपालीहै स्याली चहूंदिशि भांगके टाटिन्ह को परदाहै । रांक शिरोमणि का किनि भाव बिलोकत लोकप को करदाहै ९० दानि जो चारि पदारथ को त्रिपुरारि तिहूं पुरमें शिर टीको । भारो भलो भले भाव को भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसीको । ता बिनु आश को दास भयो कबहूं न मिट्यो लघु लालच जीको । साधों कहा करि साधनते जो पै राधो नहीं पति पारबती को ९१ जाते जरे सब लोक बिलोकि त्रिलोचन सो बिष लोक लियोहै । पानकियो बिष भूषण भो करुणा बरुणालय साइँ हियोहै । मुरोइ फोरबे योग कपार किधौं कछु काहू लखाइदियोहै । काहे न कानकरौ बिनती तुलसी कलिकाल बेहाल कियोहै ९२ घनाक्षरी ॥ खायो काल कूट भयो अजर अमर तन भवन मशान गथ गाठरी गरदकी । डमरूकपाल कर भूषण कराल व्याल बावरे बड़ेकी रीझ बाहन बरद की । तुलसी बिशाल गोर गात बिलसत भूति मानों हिमगिरि चारु चाँदनी

शरदकी । अर्थ धर्म काम मोक्ष बसत बिलोकनि में काशी करामाति योगी जागति मरद की ९३ पिंगल जटा कलाप माथे तौ पुनीत आप पावक नैना प्रताप भूप बरतहै । लोचन बिशाललाल सोहैं बालचंद्र भाल कंठ कालकूट ब्याल भूषणधरतहै । देत न अघात रीझि खात पात आकहीके भोरानाथ योगी जब अवढर ढरत हैं । सुंदरदिगम्बर बिभूतिगात भांगखात रूरे शृङ्गीपूरे काल कंटक हरत हैं ९४ देत संपदा समेत श्री निकेत याचकनि भावन बिभूतिभांग वृषभबहनुहै । नाम बाम देव दाहिनोसदा असंगरंग अरधंग अंगना अनंगको महनुहै । तुलसीमहेशकोप्रभाव भावहीसुगम अगमनिगम हूंको जानिबो गहनुहै । भेष तो भिषारीको भयंकर रूप शङ्कर दयाल दीनबंधु दानी दारिददहनुहैं ९५ चाहे न अनङ्गअरिएकोअंगमांगतेकोदेवोइपैजानिये सुभावसिद्धि बानिसो । बारिबुंद चारित्रिपुरारिपर डारियेतौ देतफल चारिलेत सेबासांची मानिसो । तुलसी भरोसो न भवेश भोरानाथको तो कोटिक कलेशकरो भरो क्षारछानिसो । दारिददमनदुख दोषदाह दावानल दुनी न दयालदूजो दानिशूलपानिसो ९६ काहेको अनेकदेव सेवतजागै मशान खोवत अपानशठ होतहठि प्रेतरे । काहेको कोटी उपाय करत मरतधाय याचत नरेश देश देशके अचेतरे । तुलसीप्रतीति बिनुत्यागेतो प्रयागतनु धनहींकेहेत दान देत कुरुखेतरे । पातहै धतूरकेहैंभोरेके भवेशसो सुरेशही की सम्पदासुभायसो न लेतरे ९७ संघटगयंद बाजिराज

भले भले भट धनधाम निकर करनिहूं न पूजैकै । बनिता बिनीत पूत पावन सोहावन औ बिनय बिबेक बिद्या सुभग शरीर वै ॥ इहां ऐसो सुख परलोक शिवलोक ओक ताको फलै तुलसी सो सुनो सावधान ह्वै । जाने बिन जानेकै रिसाने केलि कबहुँक शिवहि चढ़ाये ह्वैहै बेलकै पतौआद्वै ६८ रति सीर बनि सिंधु मेषला अवनि पति औनिप अनेक ठाढ़े हाथ जोरि हारिकै । संपदा समाज देखि लाज सुरराजहू के सुख सब बिधि बिधि दीन्हेहैं सँवारिकै ॥ इहां ऐसो सुख सुरलोक सुरनाथ पद ताको फल तुलसी सो कहैगो बिचारिकै । आकके पतौआ चारि फूलके धतूरेके द्वै दीन्हे ह्वैहैं बारक पुरारिपर डारिकै ६६ देवसरि सेवों बामदेव गावँ रावरेहीं नाम रामही के मांगि उदर भरतहौं । दीबे योग तुलसी न लेत काहूको कछुक लिखी न भलाई भाल पोच न करतहौं ॥ येते हूं पर कोऊ जो रावरो हूं जोर करै ताको जोर देव दीनद्वारे गुदरतहौं । पाइकै औराहनो औराहनो न दीजै मोहिं कलि काल काशीनाथ कहे निबरत हौं १०० चेरो राम रायको सुयश सुनि तेरो हरु पाइँ तर आइ रह्यों सुर सरितीरहौं । बामदेव रामको सुभाव शीलजानियत नातो नेह जानिजिय रघुबीरभीरहौं ॥ अधिभूतवेद न बिषम होत भूतनाथ तुलसीबिकल पाहि पचतकुपीरहौं । मारिये तौ अनायास काशी बास खासफल ज्याइये तौ कृपाकरि निरुजशरीरहौं १ जीवेकीन लालसादयाल महादेवमोहिं मालुमहैतोको मरबेईको रहतहौं । काम रिपुरामकेगुलाम

मनको कामतरु अवलंब जगदंब सहित चहत हौं । रोगभयो भूतसों कुभूत भयो तुलसीको भूतनाथ पाहि पदपंकज गहतहौं ॥ ज्याइये तो जानकी जीवन जन जानिजिय मारियेतो मांगी मीच सूधिये कहतहौं २ भूतभव भवति पिशाच दूत प्रेत प्रिय आपनो समाज शिव आपुनीकेजानिये । नानावेष बाहन बिभूषण बसन बास खानपान बलि पूजा बिधिको बखानिये ॥ रामके गुलामनकी रीतिप्रीति सूधीसब सबसों सनेह सबहीको सनमानिये । तुलसीकी सुधरै सुधारे भूतनाथही के मेरे मायबाप गुरु शंकर भवानिये ३ गौरिनाथ भोरानाथ भवत भवानीनाथ विश्वनाथपुर फिरि आन कलिकाल की । शंकरसे नर गिरिजासी नारी काशीबासी बेदकही सही शशि शेपर कृपालकी । छमुख गणेशते महेशते पियारे लोग बिकल बिलोकियत नगरी बिहाल की । पुरी सुरबेलिकेलि कांटत किरातकलि निठुर निहारिये उघारि डीठिभालकी ४ ठाकुर महेश ठकुराइनि उमासी जहां लोकबेदहूं बिदित महिमा ठहरकी । भट रुद्रगण पूत गणपति सनापति कलिकालकी कुचालकाहू तो न हरकी ॥ बसी बिश्वनाथ की बिषाद बड़ो वाराणसी बूझिये न ऐसीगति शंकर शहरकी । कैसे कहैं तुलसी वृषासुरके बरदानि बाणि जानि सुधातजि पीवन जहरकी ५ लोकबेदहूं बिदित वाराणसी की बड़ाई बासी नरनारी ईश अंबिका सरूपहैं । कालनाथ कोतवाल दंडकारी दंडपाणि सभासद गणपसे अमित अनूपहैं ॥

तहउँ कुचाल कलिकाल की कुरीत कैधौं जानत न मूढ़ इहां भूतनाथ भूपहैं । फलैफूलै फैलै खलसीदै साधु पल पल बाती दीपमालिका ठठाइसत सूपहैं ६ पंचकोश पुण्यकोश स्वारथ परमारथकोजानिआपु आपने सुपास बासदियोहै । नीच नरनारिन सँभारिसकै आदर लहत फल कादर बिचारि जो न कियोहै ॥ बारी बाराणसी विनुकहै चक्र चक्रपाणि मानि हितहानिसो मुरारिमन भियोहै । रोषमें भरोसो एक आशुतोष कहिजात बिकल बिलोकि लोक काल कूट पियोहै ७ रचत बिरंचि हरिपालत हरतहर तेरेहिप्रसाद जगअगजग पालिकै । तोहिमें विकास बिश्व तोहिमें बिलास सब तोहिमें समातु मातु भूमिधर बालिके ॥ दीजै अवलंब जगदंबन बिलंबकीजै करुणा तरंगिनी कृपा तरंग मालिके । रोष महाभारी परितोष महतारी दुनी देखिये दुखारी मुनि मानस मरालिके ८ निपट बसेरे अघओगुण घनेरे नर नारिउ अनेरे जगदंब चेरीचेरेहैं । दारिद दुखारी देवि भूसुर भिषारी भीरु लोभ मोह काम कोह कलिमल घेरेहैं ॥ लोकरीति राखी रामसाखी बामदेव जानि जननकी बिनतीमानि मातुकहिमेरेहैं । महामारी महेशानी महिमाकीखानी मोद मंगलकी राशी काशी बासी दास तेरेहैं ९ लोगनको पापकैधौं सिद्ध सुरशाप कैधौं काल के प्रताप काशी तिहुंताप तईहै । ऊंच नीचे बीच धनिक रंक राजाराय हठनि बजाइकरि डीठि पीठि दईहै ॥ देवता निहोरेमहा मारीनसों करजोरे भोरानाथ जानी

मारे अपनीसी कहीठईहै । करुणानिधान हनुमान बीर बलवान यशराशि जहांतहां तैसी लूटिलईहै १० शंकर शहर सर नारि नर बारि चारि बिकल महामारि महा माया भईहै । उछरत उतरात हहरात मरिजात भभरि भगात जलथल मीच मईहै ॥ देवन दयाल महिपाल न कृपाल चित बाराणसो बाढ़त अनीत नितनईहै । पाहि रघुराज पाहि कपिराज रामदूत रामहुंकी बिगरी तहीं सुधारि लईहै ११ एकतो कराल कलिकाल शूल मूलतामें कोढ़मेंकी खाजसी शनीचरीहै मीनकी । बेदधर्म दूरिगये भूमिचोर भूपभये साधुसिद्ध मानजात बीतेपाप पीनकी ॥ दूसरेको दूसरो न द्वार राम दयाधाम रावरोईगति बलि बिभवबिहीनकी । लागै गी पै लाज वा बिराजमान बिरदहि महाराज आज जो न देत दाददीनकी १२ राम नाम मातपितु स्वामी समरथ हितु आश राम नामकी भरोसो राम नामको । प्रेम राम नामहीसों नेम रामनामही को जानो न मरम पग दाहिनो न बामको ॥ स्वारथ सकल परमारथको रामनाम रामनाम हीन तुलसो न काहूकामको । रामकी शपथ सरवसुमेरे राम नाम कामधेनु कामतरु मोसेक्षीण छामको १३ सवैया ॥ मारग मारि सुमारि कुमारग कोटिक कै धनजीति कै लीयो । शंकर कोपसों पापको दाम परीक्षित जाहिगो जारि कै हीयो ॥ काशीमें कंटक जे तेभये ते गे पाइ अघाइकै आपनोकीयो । आजुकिकाल परौं कि नरौं जड़ जाहिंगे चाटि देवारी को दीयो १४

कुंकुम अंगसों रंगजितो मुखचन्दन चन्दसो होड़परीहै। बोलत बोल समिद्धचवै अवलोकत शोच बिषाद हरीहै ॥ गौरीको गंग बिहंग निबेष कि मंजुल मूरति मोदभरीहै। पेखिसप्रेम पयानसमयसबशोच बिमोचनक्षेमकरीहै १५ घनाक्षरी ॥ मंगलकी राशि परमारथकी खानि जाकी बिरची बनाइबिधि केशवबसाईहै। प्रलयहूं कालराखी शूलपाणि शूलपर मीचबश नीचसोउ चाहत खसाईहै॥ छांड़ि क्षितिपाल जो परीक्षित भये कृपाल भलोकियो खलको निकाई सो नशाईहै। पाहि हनुमान करुणा निधान रामपाहि काशी कामधेनु कलिकुहत कसाई है १६ बिरची बिरंचिकी बसत विश्वनाथकी जो प्राणहूते प्यारीपुरी केशव कृपालकी। ज्योतिरूपलिंगमयी अगिणित लिंगमयी सोछबि तरणि विदरणि जगजालकी ॥ देवी देव देव सरिसिद्ध मुनिबरबास लोपति बिलोकति कुलिपि भोड़े भालकी। हाहाकरै तुलसी दयानिधान राम अैसी काशीकी कदर्थना कराल कलिकालकी १७ आश्रम बरण कलि बिवश बिकलभये निज निज मर याद मोटरीसी डारदी। शंकर सरोष महामारिहिते जानियत साहिब सरोषदुनी दिन दिन दारकी ॥ नारि नर आरतपुकारत सुनैनकोऊ काहू देवतन मिलिमोठी सुठी मारदी। तुलसी सभीत पाल सुमिरे कृपाल राम समय सुकरुणा सराहि सनकारदी ३१८ ॥

इतिश्रीगोसाईंतुलसीदासकृत
कवितावलीरामायणसमाप्तं ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	लावनी	मिश्रितमाहात्म्य
योगवाशिष्ट	**किस्सावग़ैरह**	गोकर्णमाहात्म्य
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	नानार्थनोसंग्रहावली	श्रीगोपालसहस्रनाम
सांख्यतत्वकौमुदी	ब्रह्मसार	कथासत्यनारायण
काव्य	शिवसिंहसरोज	हनुमान बाहुक
सूरसागर	भक्तमाल	जनकपच्चीसी
कृष्णसागर	इन्द्रसभा	हरिहरसगुणनि० प०
बिश्रामसागर	बिक्रमबिलास	बनयात्रा
प्रेमसागर	बैतालपच्चीसी	कायस्थबर्णनिर्णय
ब्रजबिलासबड़ा व छोटा	पद्मावतीखण्ड	बिहारवृन्दाबन
कृष्णप्रिया	शुकबहत्तरी	समरबिहारवृन्दाबन
बिजयमुक्तावली	बकावलीसुमन	कल्पभाष्य
अनेकार्थछन्दोर्णवपिङ्गल	चहारदरवेश	**दरशी**
कविकुलकल्पतरु	किस्साहातिमताई	अक्षरावली
रसराज	अपूर्व्वकथा	स्वयम्बोध
सत्सई मूल तथा सटीक	किस्सागुलसनोवर	ज्ञानचालीसी
सभाबिलास	सहस्ररजनीचरित्र	दोहावली
तुलसीशब्दार्थ	सिंहासनबत्तीसी	बालाबोध
भजनावली	राबिन्सन्काइतिहास	बिद्यार्थीकीप्रथमपुस्तक
प्रेमरत्न	सीताहरण	किताबजंची
युगुलबिलास	सतीबिलास	गणितकामधेनु
चिचचन्द्रिका	**मुतफर्कात**	लीलावती
बारहमासाबलदेवप्रसाद	शनिश्चर की कथा	पटवारीकीपुस्तकें४ भाग
मनोहरलहरी	ज्ञानमाला	**ज्योतिषभाषा**
गंगालहरी	गोपीचन्दभरतरी	जातकचन्द्रिका
यमुनालहरी	कथाश्रीगंगाजीकी	जातकालंकार
जगद्विनोद	अवधयात्रा	दैवज्ञाभरण
शिङ्गारबत्तीसी	भरतरीगीत	ज्ञानस्वरोदय
पद्मावत	दानलीला नागलीला	रमलसार
राग	रासलीला द्वा० प्र० कृत	इन्द्रजाल
रागप्रकाश	दोहावली रत्नावली	
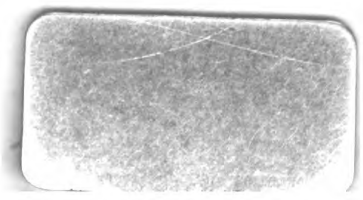
नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृतकीपुस्तकें	**संस्कृतउर्दूटीका**	प्रतापबिनोद
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	मनमोजचरित्र
सिद्धान्तचंद्रिका	विष्णुहारीत	भविष्योत्तरपुराण
अमरकोषतीनोंकांडस०	महिम्नस्तोत्र	स्कन्दपु०कासेतुबन्धखण्ड
पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क	मनोहरकहानी
निर्णयसिंधु	याज्ञवल्क्यस्मृति	भ्रमजालकनाटक
संग्रहशिरोमणि	**संस्कृतभाषाटीका सहित**	सीतावनबास
भगवद्गीतासटीक		किस्सामर्द औरत
दुर्गापाठमूल	अमरकोष	नवीनसंग्रह
दुर्गापाठसटीक	याज्ञवल्क्यस्मृति	सुदामाचरित्र
विष्णुभागवत	संध्यापद्धति	ज्ञानतरंग
अपराधभंजनस्तोत्र	व्रतार्क	सप्तशतिका
दुर्गास्तोत्रसटीक	भगवद्गीताटीकाह०बं०	बिजयचंद्रिका
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीताटीकाआ०गि०	रामायणवाल्मीकीय
कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोविन्द	भुवनेशभूषण
तथाछोटा	कथासत्यनारायण	महाभारतसबलसिंह चौहानकृत
मथुरासभा	परमार्थसार	सुन्दरबिलास
तुलसीतत्वभास्कर	शार्ङ्गधरसंहिता	गीतरसिका
रामबिवाहोत्सब	पाराशरीसटीक	कबित्तावलीरामायण स०
ज्योतिष	शीघ्रबोधसटीक	इलाजुलगुरबा भाषा
मुहूर्त्तगणपति	लघुजातक	रसायनप्रकाश
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	षट्पञ्चाशिका	रामचंद्रिका सटीक
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	सामुद्रिक	वाराह पुराण
मुहूर्त्तमार्त्तण्डसटीक	**नवीनकितावें**	सौदागरलीला
मुहूर्त्तदीपक	कालिंजरमाहात्म्य	रीडर नम्बर १
बृहज्जातकसटीक	सुधामन्दाकिनी	रीडर नम्बर २
जातकालंकार	रामबिनयशतक	सीक्वेल
जातकाभरण	नारीबोध	
होरामकरंद